



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

# भारत

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



सोमवार, 02 जून 2025 • वर्ष 6 • अंक 45 • मूल्य: 5 रुपए

सांस की बीमारी का आयुर्वेदिक...



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि रोगों से दूर रहना आसुओं के माध्यम से बढ़ जाता है। रुदन एक ऐसी प्रक्रिया है कि जिसके द्वारा रोग निवारण होता है। जब कोई तनावग्रस्त होता है तब उसको रोग चाहिए। यदि रोग न भी आए तो नाटकीय रुदन करना चाहिए जो धीरे-धीरे वास्तविक रूप ले लेगा। आप रोएंगे तो आपके जितने भी दिगंतित व दुःखित भाव होंगे वे बाहर निकलेंगे और यही रोग निवारण का कारण बनेगा।

पेज-10-11

## अहिल्याबाई की छाया में PM मोदी का संकल्प



@ भारतश्री व्यूरो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में इंदौर में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती पर देशवासियों को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण की शुरुआत भारत की मातृशक्ति को प्रणाम करके की। उन्होंने कहा कि आज इतनी बड़ी संख्या में माताएं, बहनें और बेटियां उनका आशीर्वाद देने आई हैं, यह उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने देवी अहिल्या को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनका जीवन आज भी भारत के लिए प्रेरणा है।

**सेवा और शासन का अद्वितीय उदाहरण हैं लोकमाता अहिल्याबाई**

PM मोदी ने देवी अहिल्या के कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि उन्होंने शासन को सेवा का माध्यम माना। उनका मानना था कि प्रशासन का मतलब है लोगों की सेवा और उनके जीवन को बेहतर बनाना। उन्होंने गरीबों को सशक्त बनाने, तीर्थ स्थलों के पुनर्निर्माण और सामाजिक सुधारों में जो योगदान दिया, वो अद्वितीय है।

**भारत की पहली महिला सशक्त प्रशासक थी अहिल्याबाई**

प्रधानमंत्री ने बताया कि अहिल्याबाई होलकर ने एक ऐसे समय में शासन संभाला जब देश के मंदिरों और सांस्कृतिक धरोहरों पर हमले हो रहे थे। उन्होंने इन तीर्थ स्थलों को फिर से संवारने का कार्य किया। मोदी ने इस बात पर भी जोर दिया कि देवी अहिल्या ने गरीबों, वंचितों और किसानों की भलाई के लिए कई योजनाएं चलाईं, जैसे जल संरक्षण, खेती को बढ़ावा देना, और कुटीर उद्योगों का विकास। देवी अहिल्या सामाजिक सुधारों में भी अग्रणी थीं। उन्होंने महिलाओं की संपत्ति में हिस्सेदारी, विधवा विवाह और बेटियों की शादी की सही उम्र जैसे मुद्दों पर कार्य किया। उन्होंने मालवा की सेना में महिलाओं की टुकड़ी बनाई और महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए कई कदम उठाए। यह सब उस समय किया गया जब समाज में महिलाओं को दबाया जाता था।

**विकास और विरासत को साथ लेकर चलना**

मोदी ने कहा कि आज का भारत भी उसी मार्ग पर है जहां परंपरा और आधुनिकता एक साथ चल रहे हैं। इंदौर मेट्रो की शुरुआत, सतना और दतिया जैसे शहरों को हवाई यात्रा से जोड़ना, और रेलवे नेटवर्क का विस्तार ये सब देश को तेजी से आगे बढ़ा रहे

हैं। उन्होंने कहा कि ये सभी योजनाएं देवी अहिल्या की सोच के अनुरूप हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जोर देकर कहा कि उनकी सरकार की हर योजना के केंद्र में महिलाएं हैं। उन्होंने बताया कि 4 करोड़ से अधिक घर बनाए गए हैं, जिनमें अधिकांश की मालकिन महिलाएं हैं। जल जीवन मिशन, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना—इन सबका मकसद महिलाओं के जीवन को आसान बनाना है।

**स्वास्थ्य से स्वाभिमान तक का सफर**

प्रधानमंत्री ने बताया कि पहले महिलाएं बीमारियों को छिपा लेती थीं, इलाज नहीं करवाती थीं। लेकिन अब आयुष्मान भारत योजना ने यह बदलाव लाया है। महिलाएं न सिर्फ इलाज करवा रही हैं, बल्कि आत्मनिर्भर भी बन रही हैं। उन्होंने बताया कि मुद्रा योजना और जनधन योजना से करोड़ों महिलाओं को सीधा लाभ हुआ है।

**महिला नेतृत्व को बढ़ावा**

प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार में पहली बार महिला वित्त मंत्री और रक्षा मंत्री बनीं। महिला सांसदों की संख्या बढ़ी है और “नारीशक्ति वंदन अधिनियम” से संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को आरक्षण मिल गया है। यह एक ऐतिहासिक कदम है जिसे कई दशकों तक रोका गया था।

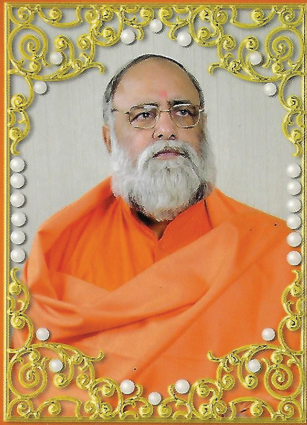
**सिंदूर से शौर्य तक**

मोदी ने हाल ही में हुए “ऑपरेशन सिंदूर” की चर्चा करते हुए कहा कि आतंकियों ने भारत की संस्कृति और नारीशक्ति पर हमला किया था, लेकिन भारतीय सेना ने सैकड़ों किलोमीटर घुसकर आतंकियों के ठिकाने नष्ट कर दिए। उन्होंने कहा, “अब भारत गोली का जवाब गोले से देगा।” प्रधानमंत्री ने बताया कि अब एनडीए से महिला अफसर पास आउट हो रही हैं, सैनिक स्कूलों के दरवाजे बेटियों के लिए खुल चुके हैं। आज बेटियां वायुसेना में फायटर पायलट हैं, युद्धपोत चला रही हैं। “नाविका सागर परिक्रमा” की दो बेटियों ने समुद्र में 250 दिन रहकर पृथ्वी का चक्कर लगाया—वो भी बिना मोटर वाली नाव से।

**देवी अहिल्या की प्रेरणा से नया भारत**

मोदी ने अंत में कहा कि भारत अब ऐसे दौर में है जहां हमें विरासत और विकास दोनों को साथ लेकर चलना है। रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती और देवी अहिल्या जैसी नारियों से हमें प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि आने वाला भारत माताओं-बहनों के योगदान से और सशक्त होगा।

सद्गुरु वाणी



मेरे लिए सच्ची मुक्ति का मतलब यही है कि हम इसी आवागमन में रहकर परमात्मा को सहजता से प्राप्त करें और अपने हर प्रकार के कष्टों से पूरी तरह मुक्त हो जाएं।

ना तो काम शत्रु है और ना ही स्त्री। तथाकथित सन्यासियों और ब्रह्मचारियों को इस सनातन सत्य को स्वीकार करना चाहिए, मनुष्य चाह कर भी प्रकृति से विद्रोह नहीं कर सकता।

आवागमन भय का विषय नहीं है। भय तब उत्पन्न होता है जब अपने आवागमन को सुधारने का प्रयास नहीं करते। संसार में आने वाला व्यक्ति संसार से विद्रोह कैसे कर सकता है? संसार से भागना कायरता है, उसे जीतें।





ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON

**MNDIVINE.COM**



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986  
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )





# पूरे देश में मानसून ने दी दस्तक

## कई राज्यों में भारी बारिश, दिल्ली में ऑरेंज अलर्ट

@ आनंद मीणा

**दे**शभर में मानसून की आहट अब ज़मीनी असर दिखाने लगी है। दक्षिण-पश्चिम मानसून ने समय से पहले मुंबई में दस्तक देकर देश के मौसम के मिजाज में बड़ा बदलाव कर दिया है। राजधानी दिल्ली में भी इस बदलाव के स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहे हैं। तेज़ हवाएं, बादल, गरज और बरसात की बुँदें, इन सबने यह संकेत देना शुरू कर दिया है कि गर्मियों की तपिश अब विदाई की ओर है। हालांकि भारतीय मौसम विभाग (IMD) के वैज्ञानिकों का कहना है कि दिल्ली में अभी आधिकारिक रूप से मानसून नहीं पहुंचा है, लेकिन मौसम की करवट ने राजधानीवासियों को राहत देने का काम जरूर किया है।

**दिल्ली-NCR में ऑरेंज अलर्ट, कहीं भी हो सकती है बारिश**

आईएमडी ने दिल्ली और एनसीआर के लिए 'ऑरेंज अलर्ट' जारी किया है, जिसका मतलब है कि आम लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। मौसम विभाग का कहना है कि अगले कुछ दिनों तक राजधानी में तेज़ हवाओं के साथ बारिश हो सकती है। खासकर रात के समय गरज के साथ तेज़ बारिश की संभावना जताई गई है। मौसम विभाग कि दिल्ली में 4 जून तक आंधी-तूफान और बिजली गिरने के साथ हल्की से मध्यम बारिश का पूर्वानुमान है। 'ऑरेंज अलर्ट' जारी होने का मतलब होता है कि मौसम जन-जीवन को प्रभावित कर सकता है, इसलिए लोग गैर-जरूरी यात्रा से बचें, खुले में न निकलें और मौसम अपडेट पर ध्यान दें।

**मई में नहीं दिखी हीट वेव, बारिश बनी राहत की वजह**

दिल्ली में मई महीने को आमतौर पर गर्मी का चरम माना जाता है, जब पारा 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है और हीट वेव (लू) चलती है। लेकिन इस साल मई ने सारे रिकार्ड तोड़ दिए, लेकिन गर्मी नहीं, बल्कि बारिश के मामले में। आईएमडी के अनुसार, एक मई से 30 मई 2025 तक दिल्ली में 188.9 मिमी बारिश दर्ज की गई, जो अब तक के इतिहास में मई महीने की सबसे अधिक बारिश है। पिछला रिकॉर्ड साल 2008 का था, जब मई में 165 मिमी बारिश दर्ज की गई थी। इस साल दिल्ली में एक भी दिन लू नहीं चली, जबकि पिछले साल यानी 2024 में मई में छह दिन भीषण गर्मी पड़ी थी।

**क्या बदल रहा है मौसम का स्वरूप?**

दिल्ली में सामान्य रूप से मई माह में 62.6 मिमी बारिश होती है। लेकिन इस बार हुई 188.9 मिमी वर्षा, सामान्य से 202% अधिक है। यानी तीन गुना से भी ज्यादा। दिलचस्प बात यह है कि पिछले साल मई 2024 में सिर्फ 0.4 मिमी बारिश हुई थी, जो सामान्य से 99% कम थी। इतना बड़ा अंतर यह दर्शाता है कि मौसम का स्वरूप अब पहले जैसा नहीं रहा। विशेषज्ञ इसे क्लाइमेट



एनॉर्मैलिटी मान रहे हैं। दिल्ली के मौसम विज्ञानी कुछ इस तरह का अनुमान लगा रहे हैं कि यह मौसम परिवर्तन का संकेत है। पश्चिमी विक्षोभों की आवृत्ति बढ़ी है और अरब सागर से नमी खिंच रही है। इसका असर दिल्ली जैसे शहरी क्षेत्रों पर सीधा पड़ रहा है।

**बारिश बनी वरदान**

गर्मी और प्रदूषण की दोहरी मार झेलती दिल्ली के लिए यह बारिश किसी संजीवनी से कम नहीं है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, 30 मई की शाम 4 बजे दिल्ली का एक्वाआई 167 दर्ज किया गया, जो 'मध्यम' श्रेणी में आता है।

**मुंबई में समय से पहले मानसून की दस्तक**

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में इस बार मानसून ने तय समय से पहले दस्तक दी। आमतौर पर यहां मानसून 10 जून के आसपास आता है, लेकिन इस बार यह 31 मई से पहले ही पहुंच गया। मुंबई, गोवा, और कोंकण तटीय इलाकों में लगातार हो रही बारिश ने मानसून की तेजी को दर्शाया है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे उत्तर भारत में भी मानसून समय से पहले पहुंच सकता है। आईएमडी अधिकारी के मुताबिक मुंबई में प्री-मानसून एक्टिविटी तेज़ हो गई है। इसके चलते दिल्ली में भी नमी बढ़ी है और यह ट्रेंड अगले 10-15 दिन तक जारी रह सकता है।

**कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट**

केवल दिल्ली या मुंबई ही नहीं, देश के अन्य हिस्सों

**AQI कैटेगरी के अनुसार-**

- 0-50: अच्छा
- 51-100: संतोषजनक
- 101-200: मध्यम
- 201-300: खराब
- 301-400: बहुत खराब
- 401-500: गंभीर

बारिश की वजह से हवा में धूल कण कम हो गए हैं, जिससे वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ है। IMD का अनुमान है कि यदि आने वाले दिनों में बारिश जारी रही, तो एक्वाआई और बेहतर हो सकता है।



में भी मानसून का असर देखा जा रहा है। मौसम विभाग ने कर्नाटक, केरल, गोवा, महाराष्ट्र, असम, मेघालय और त्रिपुरा के लिए रेड और ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इन राज्यों में अगले 48 घंटों के भीतर भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना जताई गई है। पहाड़ी राज्यों में भी लैंडस्लाइड और बिजली गिरने जैसी घटनाओं का खतरा बना हुआ है।

**क्या मानसून बदल रहा है अपना पैटर्न?**

मौसम विशेषज्ञ मानते हैं कि दक्षिण-पश्चिम मानसून की चाल और व्यवहार में पिछले कुछ वर्षों से बड़ा बदलाव देखा गया है। इसके पीछे कई वजहें मानी जा रही हैं। समुद्र की सतह का तापमान बढ़ने से बादल बनने और वर्षा की प्रणाली में बदलाव हो रहा है। शहरीकरण और वनों की कटाई: तेजी से बढ़ते शहरी इलाकों ने स्थानीय जलवायु

को प्रभावित किया है।

**लोगों को सावधानियां बरतने की है जरूरत**

आईएमडी और आपदा प्रबंधन विभाग ने आम नागरिकों को कुछ एहतियात बरतने की सलाह दी है। उनका कहना है कि मौसम अपडेट पर नजर रखें। बिजली गिरने के दौरान खुले मैदान में न जाएं। पेड़ों या खंभों के नीचे खड़े न हों। बिना जरूरत के यात्रा से बचें। घरों की बिजली व्यवस्था चेक करें। देश में मानसून की दस्तक से जहां गर्मी से राहत मिली है, वहीं तेज़ हवाओं, आंधी और बिजली गिरने का खतरा भी बना हुआ है। खासकर दिल्ली-NCR जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में सतर्कता बेहद जरूरी है। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में हर मौसम एक चेतावनी बनकर आता है।



# देश में फिर बढ़ रहे हैं कोरोना के मामले, सतर्क रहने की ज़रूरत

@ मोहित प्रजापति

**दे**श में एक बार फिर कोरोना वायरस ने दस्तक दी है। हाल ही में देशभर में कोविड-19 के एक्टिव केसों की संख्या 3207 तक पहुंच गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार 20 लोगों की मौत भी हो चुकी है। इस बीच सरकारें सतर्क हो गई हैं और लोगों से कोरोना नियमों का पालन करने की अपील की जा रही है।

## केरल और महाराष्ट्र सबसे ज्यादा प्रभावित

देश में सबसे अधिक एक्टिव केस केरल (1147) में हैं। इसके बाद महाराष्ट्र (681 केस) है। ये दोनों राज्य देश के कुल एक्टिव मामलों के करीब 60 प्रतिशत हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं। शुक्रवार को महाराष्ट्र में 84 नए केस सामने आए। मुंबई में इस साल जनवरी से अब तक कुल 681 मरीजों की पुष्टि हुई है।

## कर्नाटक में तीसरी मौत, सरकार का आदेश- बच्चों को सर्दी-खांसी या बुखार हो तो स्कूल न भेजें

कर्नाटक के मैसूर में शुक्रवार को 63 साल के एक बुजुर्ग की मौत हो गई। राज्य में अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है। कर्नाटक सरकार ने इस स्थिति को देखते हुए नया सर्कुलर जारी किया है, जिसमें माता-पिता से अपील की गई है कि अगर बच्चों को सर्दी, खांसी या बुखार हो तो उन्हें स्कूल न भेजें।

## देश में अब तक किन-किन राज्यों में हुई मौतें ?

देश में अब तक जिन 20 लोगों की मौत कोरोना से हुई है, उनमें सबसे अधिक 6 मौतें महाराष्ट्र में, और बाकी केरल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में हुई हैं। दिल्ली, गुजरात, पंजाब और तमिलनाडु में भी एक-एक मौत की पुष्टि 31 मई को हुई। मिजोरम में करीब 7 महीने बाद दो कोविड केस सामने आए हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, यह अक्टूबर 2024 के बाद पहला मौका है जब राज्य में कोविड के मरीज मिले हैं। इनका इलाज जोरम मेडिकल कॉलेज, आइजोल में चल रहा है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग ने लोगों से घबराने की नहीं, बल्कि सतर्क रहने की अपील की है। उन्होंने कहा कि मास्क पहनें, हाथ धोते रहें, सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करें और भीड़भाड़ वाली जगहों से बचें।

## कोविड के नए वैरिएंट भी सामने आए

देश के कई हिस्सों से लिए गए सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग में चार नए कोविड वैरिएंट की पहचान हुई है। ICMR के डायरेक्टर डॉ. राजीव बहल के अनुसार ये वैरिएंट हैं:

LF.7

XFG

JN.1

NB.1.8.1

इन वैरिएंट्स की पहचान दक्षिण और पश्चिम



भारत से हुई है। फिलहाल ये वैरिएंट बहुत गंभीर नहीं माने गए हैं, लेकिन तेजी से फैलने की क्षमता इनमें देखी गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इन वैरिएंट्स को 'वैरिएंट ऑफ़ इंटरेस्ट' की श्रेणी में रखा है, यानी इन पर निगरानी ज़रूरी है लेकिन चिंता का कारण नहीं हैं। फिर भी, चीन और एशिया के अन्य हिस्सों में इन्हीं वैरिएंट्स के कारण कोरोना के मामले बढ़ते दिख रहे हैं।

## सबसे आम है JN.1 वैरिएंट

भारत में फिलहाल सबसे ज्यादा पाया जाने वाला वैरिएंट JN.1 है। टेस्टिंग में आधे से ज्यादा मामलों में यही वैरिएंट पाया गया है। इसके बाद BA.2 (26%) और ओमिक्रॉन की अन्य सब-लाइनें (20%) हैं। JN.1, ओमिक्रॉन के BA.2.86 स्ट्रेन से जुड़ा हुआ है और इसे सबसे पहले अगस्त 2023 में पहचाना गया था। WHO ने दिसंबर 2023 में इसे विशेष ध्यान देने योग्य घोषित किया था। इसमें 30 से ज्यादा म्यूटेशन पाए गए हैं, जो शरीर की इम्युनिटी को कमजोर कर सकते हैं।

## JN.1 के लक्षण और असर

JN.1 के लक्षण आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर

एक हफ्ते या उससे ज्यादा तक रह सकते हैं। इनमें बुखार, खांसी, कमजोरी और थकावट शामिल हैं। कई मामलों में लोग पूरी तरह ठीक होने के बाद भी लक्षणों से जूझते रहते हैं — इसे 'लॉन्ग कोविड' कहा जाता है।

## NB.1.8.1 — चिंता का नया कारण

NB.1.8.1 वैरिएंट में पाए गए म्यूटेशन्स — A435S, V445H, और T478I — इसे बाकी वैरिएंट्स से तेजी से फैलने वाला और ज्यादा संक्रमणकारी बनाते हैं। यह बनी हुई इम्युनिटी को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस पर खास नज़र रखी जा रही है।

## महाराष्ट्र में टेस्टिंग बढ़ाई गई

महाराष्ट्र सरकार ने बताया कि इस साल जनवरी से अब तक 9592 कोविड टेस्ट किए जा चुके हैं। पिछले 24 घंटे में 84 नए मरीज मिले हैं। सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को हाई अलर्ट पर रखा है। महाराष्ट्र के अलावा जम्मू-कश्मीर में भी दो कोविड केस सामने आए हैं। ये दोनों छात्र केरल से हैं और श्रीनगर के गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज में पढ़ाई कर रहे हैं।

क्या करें और क्या न करें ? स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य सरकारें बार-बार लोगों से सतर्क रहने की अपील

कर रही हैं। कुछ बुनियादी सावधानियों का पालन करके हम संक्रमण से बच सकते हैं। अगर सर्दी, खांसी या बुखार है तो घर पर रहें। बच्चों को स्कूल भेजने से पहले उनके लक्षणों को देखें। भीड़-भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचें। हाथों की सफाई करते रहें। मास्क का इस्तेमाल करें। बुजुर्गों और बीमार लोगों की खास देखभाल करें।

## टीकाकरण अब भी है ज़रूरी

विशेषज्ञों का कहना है कि कोविड वैक्सीन से बनी इम्युनिटी समय के साथ कम हो सकती है, लेकिन बूस्टर डोज संक्रमण के खतरे को कम कर सकती है। जिन लोगों ने अब तक बूस्टर डोज नहीं ली है, उन्हें जल्द से जल्द लेनी चाहिए। फिलहाल भारत में कोरोना की स्थिति नियंत्रण में है, लेकिन हमें पिछले अनुभवों से सीखकर सतर्क रहना होगा। नए वैरिएंट सामने आ चुके हैं और संक्रमण धीरे-धीरे फैल रहा है। ऐसे में घबराने की ज़रूरत नहीं, लेकिन लापरवाही बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य सरकारें लगातार निगरानी कर रही हैं। आम लोगों को बस इतना करना है कि सावधानी बरतें, लक्षण दिखें तो तुरंत जांच कराएं और कोविड प्रोटोकॉल का पालन करें।



# ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी सियासी घमासान जारी

## कांग्रेस-बीजेपी के बीच बढ़ता जा रहा है विवाद



@ रिकू विश्वकर्मा

**ऑ**परेशन सिंदूर के बाद भले ही सीज़ फायर हो गया हो, लेकिन भाजपा और कांग्रेस फिलहाल किसी सीज़ फायर के मूड में नहीं दिख रहे। अब नया बवाल शुरू हुआ थरूर और सिंदूर को लेकर। कांग्रेस के सांसद शशि थरूर मोदी सरकार की तारीफ कर रहे हैं और उनकी अपनी ही पार्टी के लोग हमलावर हैं। सर्जिकल स्ट्राइक पर पूरा युद्ध शुरू हो गया है। दोनों तरफ से 'हम फर्स्ट, हम फर्स्ट' के गोले दागे जा रहे हैं।

पनामा में शशि थरूर ने आखिर ऐसा क्या कह दिया कि उनकी अपनी ही पार्टी उन पर हमलावर हो गई। सिंदूर और थरूर को लेकर क्यों आमने-सामने है बीजेपी-कांग्रेस। सिंदूर को लेकर ममता बनर्जी ने पीएम मोदी पर क्या कहा। क्या शशि थरूर का कांग्रेस से जाना तय हो गया है। सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर क्या है दोनों पार्टियों के दावे। इन सब सवालों के जवाब आज तलाशने की कोशिश करते हैं।

बीजेपी और कांग्रेस दोनों सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर आपस में भिड़े हुए हैं। बीजेपी कह रही है कि 2016 में हमने वो किया जो पहले कभी नहीं हुआ था। तो कांग्रेस कह रही है कि हमारी सरकारों में यह कई बार हुआ। हमने कभी घूम-घूम कर इसका प्रचार नहीं किया। दोनों तरफ के प्रवक्ताओं की फौज मैदान में है और बयानों के तीर छोड़े जा रहे हैं। हालांकि इसकी शुरुआत हुई शशि थरूर के एक बयान से।

शशि थरूर, पूर्व विदेश राज्य मंत्री, पूर्व डिप्लोमेट और केरल के तिरुवनंतपुरम से लगातार चार बार के कांग्रेस पार्टी के सांसद, पनामा में थे। पनामा साउथ अमेरिका का एक देश है। नक्शे में आप देखेंगे तो नॉर्थ अमेरिका और साउथ अमेरिका के बीच लटका हुआ दिखाई देगा। वैसे ही जैसे इस वक्त शशि थरूर का भविष्य दो पार्टियों के बीच झूलता हुआ दिखाई दे रहा है। शशि थरूर फिलहाल भारत के एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। इस प्रतिनिधिमंडल में झारखंड मुक्ति मोर्चा के सरफराज अहमद, शिवसेना के मिलिंद देवड़ा, बीजेपी के शशांक मणि त्रिपाठी, भुवनेश्वर कलिता, तेजस्वी सूर्या और तेलुगु देशम पार्टी के जीएम हरीश बाल योगी शामिल हैं। इसी तरह के छह और भी प्रतिनिधिमंडल अलग-अलग देशों में भेजे गए हैं, जिनका काम अलग-अलग देशों में ऑपरेशन



सिंदूर और आतंकवाद को लेकर भारत का पक्ष रखना है।

लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा शशि थरूर की ही है। कुछ समय पहले तक मोदी सरकार की आलोचना करने वाले थरूर ने पिछले कई मौकों पर उनकी तारीफ की है। अब उन्होंने 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 की बालाकोट एयर स्ट्राइक की भी तारीफ की। कहा, हाल के वर्षों में जो चीज बदली है, वो यह है कि अब आतंकवादियों को भी यह पता चल गया है कि उन्हें इसकी कीमत चुकानी होगी। इस पर कोई संदेह नहीं होना चाहिए। जब पहली बार भारत ने सितंबर 2016 में उरी में सर्जिकल स्ट्राइक करने के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा का उल्लंघन किया था, यह कुछ ऐसा था जो हमने पहले नहीं किया था। थरूर के इस बयान पर बवाल शुरू हो गया। उन्हीं की पार्टी के प्रवक्ताओं और नेताओं ने उन्हें घेर लिया। उदित राज ने उन्हें बीजेपी का सुपर स्पेक्सपर्सन बता दिया। उदित राज ने कहा “मेरे प्रिय शशि थरूर, काश मैं प्रधानमंत्री मोदी को मना सकता कि वह आपको भाजपा का सुपर प्रवक्ता घोषित कर दे, यहां तक कि भारत आने से पहले ही विदेश मंत्री भी घोषित कर दें। आप कांग्रेस के स्वर्णिम इतिहास को यह कहकर कैसे बदनाम कर सकते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी से पहले भारत ने कभी भी एलओसी और अंतरराष्ट्रीय सीमा पार नहीं की थी।”

“1965 में भारतीय सेना ने लाहौर सेक्टर में कई जगहों पर पाकिस्तान में प्रवेश किया और पाकिस्तानियों को चौंकाया। 1971 में भारत ने पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिए। यूपीए सरकार के दौरान कई सर्जिकल स्ट्राइक की गईं। लेकिन राजनीतिक रूप से भुनाने के लिए ढोल

नहीं पीटा गया। जिस पार्टी ने आपको इतना कुछ दिया, उसके प्रति आप इतने बेईमान कैसे हो सकते हैं।”

उदित राज की पोस्ट को कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने रीपोस्ट किया। साथ ही लाहौर जिले के बुर्की में एक कब्जे वाले पाकिस्तानी पुलिस स्टेशन के बाहर पोर्च देते हुए चार सिख रेजीमेंट के अधिकारियों की तस्वीर भी पोस्ट की। बाद में एक और पोस्ट में पवन खेड़ा ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स को दिए गए एक इंटरव्यू का लिंक भी शेयर किया, जिसमें पहले हुई सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में बातचीत हुई थी। खेड़ा ने इसमें थरूर को भी टैग किया।

खेड़ा यहीं नहीं रुके। उन्होंने थरूर की ही किताब The Paradoxical Prime Minister का एक पन्ना शेयर किया। उन्होंने कुछ लाइनें हाइलाइट कीं, जिनमें थरूर ने सर्जिकल स्ट्राइक और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे को चुनावी और राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने के लिए पीएम मोदी की आलोचना की थी।

पवन खेड़ा ने कहा कि “मैं डॉक्टर थरूर की बातों से सहमत हूँ, जो उन्होंने 2018 में अपनी किताब में लिखी थी।” जवाब में थरूर की ओर से भी एक ट्वीट आया। बिना किसी का नाम लिए कहा, “पनामा में एक लंबे और सफल दिन के बाद मुझे आधी रात को यहां से निकलकर 6 घंटे बाद बोगोटा, कोलंबिया के लिए प्रस्थान करना है। इसलिए मेरे पास वास्तव में इसके लिए समय नहीं है। लेकिन फिर भी उन कट्टरपंथियों के लिए जो नियंत्रण रेखा के पार भारतीय वीरता के बारे में मेरी कथित अज्ञानता के बारे में भड़के हुए हैं, उनके लिए मैं स्पष्ट रूप से और स्पष्ट रूप से केवल आतंकवादी हमलों के प्रतिशोध के

बारे में बोल रहा था, ना कि पिछले युद्धों के बारे में।”

“मेरी टिप्पणी से पहले हाल के वर्षों में हुए कई हमलों का उल्लेख किया गया था, जिनके दौरान भारत की पिछली प्रतिक्रियाएं नियंत्रित और संयमित थीं, जो कि हमारी नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा के प्रति जिम्मेदार सम्मान के कारण थीं। जैसा कि हमेशा होता है, आलोचक और ट्रोल मेरे विचारों और शब्दों को अपनी मर्जी से तोड़-मरोड़ सकते हैं। मेरे पास वाकई इससे बेहतर काम है। शुभ रात्रि।”

थरूर ने अपने बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किए जाने की बात कही, साथ ही अपने तर्कों के समर्थन में सफाई भी दी। लेकिन कांग्रेस पार्टी की ओर से हमला जारी रहा। कांग्रेस पार्टी के ऑफिशियल हैंडल से भी एक ट्वीट आया जिसमें 2008 से 2014 के बीच छह सर्जिकल स्ट्राइक्स करने का दावा किया गया है। इस ट्वीट का कैप्शन था – “For Your Information” यानी “आपकी जानकारी के लिए।” कांग्रेस पार्टी ने भले ही नाम ना लिखा हो, लेकिन स्पष्ट था कि यह ट्वीट के जरिए निशाना शशि थरूर पर था।

निशाना भाजपा की ओर से भी साधा गया। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने ट्वीट करते हुए लिखा – “कांग्रेस पार्टी क्या चाहती है और उन्हें देश की कितनी परवाह है। क्या भारतीय सांसदों को विदेशी राष्ट्र में जाकर भारत और उसके प्रधानमंत्री के खिलाफ बोलना चाहिए। राजनीतिक हताशा की भी हद होती है।” रिजिजू ने यह भी पूछा कि कांग्रेस का हाथ किसके साथ है। क्या कांग्रेस पार्टी में देश के लिए बोलना मना है। उन्होंने कहा कि कम से कम कठिन समय में तो हमें एक सुर में बोलना चाहिए।

एक सांसद जो कल तक सरकार पर हमलावर था, आज तारीफ कर रहा है। विपक्ष के सांसद का समर्थन सरकार कर रही है और विपक्ष की पार्टी अपने ही सांसद पर हमलावर है। ऐसा दुर्लभ नजारा भारत की ही राजनीति में संभव है। प्रतिनिधिमंडल भेजे जाने से पहले से ही उनके नाम को लेकर बवाल हो रहा है। अपनी विशिष्ट शैली की अंग्रेजी के लिए मशहूर शशि थरूर ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जिस तरीके से भारत का पक्ष रखा और मोदी सरकार के फैसलों की प्रशंसा की, उनके विपक्षी भी उनके मुरीद हो गए। अंतरराष्ट्रीय न्यूज़ चैनलों को दिए इंटरव्यू में थरूर ने आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए पाकिस्तान की आलोचना की और भारत की कार्रवाई का समर्थन किया। तभी से यह विवाद नया रुख मोड़ ले रहा है।



## उर्दू न पाकिस्तान की है, न मुसलमानों की

**जि**स उर्दू को हम यहां बचाने की कोशिश कर रहे हैं वो पाकिस्तान में आरोपित भाषा कही जा रही है। पॉडकास्टर अपने मुल्क के हुक्मरानों को समझा रहे हैं कि हमारी भाषा पंजाबी, सिंधी, सरायकी, पश्तो है तो उर्दू बोलने का दबाव ना डालें। तर्क है कि इसी दबाव में बंगाल अलग होकर बांग्लादेश बन गया। बात ठीक है लेकिन दबाव फिर भी बंद नहीं होगा क्योंकि पहचान के विरोधाभास में जूझते मुल्क को बस इस्लाम और उर्दू का सहारा है। विड़बना है कि दोनों का आग्रह एक ऐसे आदमी ने किया था जो रोज़मर्रा की जिंदगी में ना इस्लाम उस तरह निभा रहा था जैसा उसके चेले चाहते हैं और ना वो उर्दू में बात करता था। मुल्क की जुबान उर्दू होगी ये बात तक वो अंग्रेज़ी में बोला था। इधर उर्दू बचानी पड़ रही है क्योंकि उसे मुसलमानों या पाकिस्तान की भाषा स्थापित करने का दुराग्रह है। हकीकत में भाषा वो आम हिंदुस्तानियों की है जिसकी पैदाइश मुगल दरबार और उसके बाहर खुद ब खुद हुई। दुनिया में बहुत सारी और लैंग्वेज ऐसे बनी हैं जब दो या तीन अलग अलग समुदायों ने एक दूसरे से बातचीत की कोशिश में कुछ मिलाजुला बना दिया। हमारे लिए वही उर्दू है।

फिलहाल उर्दू की हालत अजब हो चली है। पंद्रह साल पहले मेरा जेएनयू में एडमिशन हुआ था उर्दू सीखने के कोर्स में। तब दूसरी डिग्री साथ चल रही थी तो मुमकिन ना हुआ पर आजकल मसूबे फिर बांधे हैं। हिंदी की बहन है तो मौसी के घर जाना चाहिए। धीरे धीरे सही सीखेंगे। हर भाषा को सीखना एक नई खिड़की खोलना है। मराठी, बंगाली, तमिल का संसार भी बहुत बड़ा है। एक जन्म में सब नहीं सीखा जा सकता लेकिन नौकरी की भाषा के साथ झंझ मार रहे हैं तो कभी कभार हिंदुस्तानी भाषाओं के साथ भी मेल मुलाकात करनी चाहिए।

नितिन ठाकुर

## मणिपुर संकट का समाधान



@ अनुराग पाठक

**म**णिपुर एक बार फिर संकट की आग में झुलस रहा है, और इस बार स्थिति ने एक गंभीर मोड़ ले लिया है। जातीय हिंसा, राजनीतिक अस्थिरता और प्रशासनिक शून्यता ने राज्य को वर्षों पीछे धकेल दिया है। बीते दो वर्षों से चले आ रहे इस संकट ने अब तक 260 से अधिक जानें ली हैं और हजारों नागरिकों को बेघर कर दिया है। 13 फरवरी 2025 से राज्य में लागू राष्ट्रपति शासन इस अस्थिरता की गवाही दे रहा है।

हाल ही में मणिपुर के 23 विधायकों ने एकजुट होकर पूर्व मंत्री थोंगम बिस्वजीत के आवास पर बैठक कर राज्य के भविष्य पर चर्चा की। इस बैठक में विधायकों ने स्पष्ट किया कि संकट का हल केवल तात्कालिक समाधान से नहीं, बल्कि दीर्घकालिक, समावेशी और संवैधानिक दृष्टिकोण से ही निकलेगा। उन्होंने कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, समावेशी संवाद, संवैधानिक सुरक्षा और कानून-व्यवस्था की निष्पक्ष बहाली—इन चार स्तंभों पर टिके समाधान की आवश्यकता है।

यह उल्लेखनीय है कि विधायकों ने शांति स्थापना के लिए नागरिक समूहों, छात्र संगठनों और विभिन्न सामाजिक तबकों के बीच संवाद की बात कही है। इससे स्पष्ट होता है कि मणिपुर की समस्या केवल राजनीतिक नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परतों में भी गहराई से उलझी हुई है।

सरकार गठन की कोशिशें तेज हो चुकी हैं। भाजपा के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल से मुलाकात कर बहुमत का दावा प्रस्तुत किया और राज्य में एक स्थायी सरकार

के गठन की तत्परता जताई। भाजपा के 13, एनपीपी और एनपीएफ के तीन-तीन तथा दो निर्दलीय विधायकों सहित कुल 21 विधायकों ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर जल्द से जल्द एक लोकप्रिय सरकार के गठन का अनुरोध किया है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि राज्यपाल से अपेक्षा की जा रही है कि वे इस राजनीतिक पहल को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक संवैधानिक कदम उठाएं।

मणिपुर के इतिहास पर नजर डालें तो यह कोई पहली बार नहीं है जब राष्ट्रपति शासन लागू किया गया हो। वर्ष 1967 से अब तक राज्य में 11 बार राष्ट्रपति शासन लगाया जा चुका है, जो अपने आप में एक गंभीर राजनीतिक अस्थिरता का संकेत है। हर बार किसी न किसी कारण से स्थायी और विश्वसनीय सरकार बनाने में विफलता रही है—कभी दलबदल, कभी बहुमत का संकट, और कभी हिंसा की भयावहता।

यह स्पष्ट है कि केवल नई सरकार के गठन से ही मणिपुर के घाव नहीं भरेंगे। राज्य को शांति, न्याय और पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इसके लिए जरूरी है कि सभी पक्ष—चाहे वे राजनीतिक दल हों, सामाजिक संगठन हों या केंद्र सरकार—एक साझा उद्देश्य के साथ आगे आए।

मणिपुर को अब अस्थायी समाधानों की नहीं, बल्कि दीर्घकालिक दृष्टिकोण, व्यापक जनसंवाद और ईमानदार राजनीतिक नेतृत्व की आवश्यकता है। राज्य के लोगों की पीड़ा को महसूस करते हुए सभी हितधारकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में मणिपुर एक बार फिर अस्थिरता का शिकार न हो, बल्कि शांति, विकास और सामाजिक समरसता का प्रतीक बने।

## जुबानी तीर

“



सरकार ने आर्थिक विकास का जो आंकड़ा पेश किया है उसके अनुसार देश की आर्थिक विकास दर 2024-25 में साढ़े छह प्रतिशत है। आर्थिक विकास की यह रफ्तार कोरोना काल के आर्थिक विकास की दर से भी कम है। जब तक आर्थिक विकास की रफ्तार तेज नहीं होगी तब तक देश की आर्थिक प्रगति की बात करने का कोई औचित्य नहीं है।

प्रियंका गांधी वाड्रा, कांग्रेस महासचिव

“



तंबाकू के विज्ञापन का पर्दाफाश करना: तंबाकू और निकोटीन उत्पादों पर उद्योग की चालों को उजागर करना, भ्रामक विपणन रणनीतियों को समझने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालती है जो हमारे युवाओं को जोखिम में डालती हैं। सभी को तंबाकू निषेध में एकजुट होकर स्वस्थ, तंबाकू मुक्त भविष्य के लिए आगे आने का आह्वान किया।

जेपी नड्डा, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री

“



भारत में अगर पटाखे भी फूटें, तो इल्जाम पाकिस्तान पर आता है। उन्होंने भारतीय सेना की भी आलोचना की थी। अफरीदी ने कहा था, 8 लाख की फौज है कश्मीर में है फिर भी ये हो गया। इसका मतलब है कि तुम लोग नालायक हो, निकम्मे हो, सुरक्षा नहीं दे सकते लोगों को।

शाहिद अफरीदी, पूर्व क्रिकेटर



# सांस की बीमारी का आयुर्वेदिक इलाज



## घर बैठे फेफड़ों को बनाएं लोहे जैसा मजबूत

@ डॉ. महिमा मक्कर

**आ**धुनिक जीवनशैली और बढ़ते प्रदूषण ने हमारे स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला है। खासकर फेफड़ों से जुड़ी बीमारियां, जैसे- दमा, ब्रोंकाइटिस, एलर्जी और अस्थमा आज के समय में आम होती जा रही हैं। सांस लेने में तकलीफ, सीने में जकड़न और बार-बार खांसी आना जैसे लक्षण अब बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को प्रभावित कर रहे हैं। हालांकि, आयुर्वेद में इन समस्याओं से बचने और उन्हें जड़ से ठीक करने के लिए कई आसान, सुरक्षित और असरदार उपाय बताए गए हैं। आयुर्वेद न केवल शरीर की प्राकृतिक प्रक्रिया को संतुलित करता है, बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी मजबूत बनाता है। आइए जानते हैं कि कैसे आयुर्वेद के माध्यम से सांस की बीमारियों से बचा जा सकता है।

**प्राणवायु को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या में करें बदलाव**

आयुर्वेद में 'प्राण वायु' का विशेष महत्व है, जो सांस लेने की प्रक्रिया को नियंत्रित करती है। अगर दिनचर्या असंतुलित हो, तो यह वायु दूषित हो सकती है जिससे सांस की बीमारियां जन्म लेती हैं। सुबह जल्दी उठें। ब्रह्म मुहूर्त (सुबह 4 से 6 बजे के बीच) में उठकर ताजी हवा में श्वास लेना फेफड़ों को ताकत देता है। तेज चलते हुए प्राणायाम करें। नाड़ी शुद्धि, अनुलोम-विलोम और कपालभाति जैसे प्राणायाम फेफड़ों की क्षमता को बढ़ाते



हैं। काम पर जाते वक्त मास्क लगाना और प्रदूषण वाले इलाकों से दूरी बनाना भी जरूरी है।

**कुछ औषधियां हैं लाभकारी**



तुलसी में एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण होते हैं। इसका नियमित सेवन सांस की नली को साफ रखता है। रोज सुबह 5 तुलसी की पत्तियां चबाएं या इसका काढ़ा बनाकर पिएं। तुलसी के साथ-साथ मुलेठी गले की खराश और सूजन के लिए फायदेमंद है। यह बलगम को बाहर निकालने में मदद करती है। मुलेठी का चूर्ण गर्म पानी या शहद के साथ लें। दिन में दो बार सेवन करें। पिप्पली का भी इस्तेमाल करना चाहिए। पिप्पली श्वसन मार्ग को खोलती है और वात-कफ को संतुलित करती है। अस्थमा के मरीजों को यह विशेष लाभ पहुंचाती है। पिप्पली चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर सुबह-शाम लें। आप आसानी से घर में एक प्रभावी काढ़ा तैयार कर सकते हैं जिससे फेफड़े साफ हों और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े।

**काढ़ा बनाने की विधि -**

- 5 तुलसी की पत्तियां
- 1 इंच अदरक
- 4-5 काली मिर्च
- 1 छोटा टुकड़ा दालचीनी
- 1 चम्मच मुलेठी चूर्ण
- 2 कप पानी

सभी सामग्री को पानी में उबालें जब तक पानी आधा न रह जाए। छानकर गर्मागर्म सेवन करें। ज्यादा मात्रा में न पिएं। दिन में एक बार पर्याप्त है।

**योगासन भी है जरूरी**

योग और आयुर्वेद दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। कुछ विशेष योगासन फेफड़ों की क्षमता को बेहतर बनाने में कारगर हैं। भस्त्रिका प्राणायाम तेज गति से सांस लेना-छोड़ना फेफड़ों को साफ करता है। यह आसन छाती को खोलता है और सांस लेने में सहूलियत देता है। अर्धमत्स्येन्द्रासन जैसे योग फेफड़ों और श्वसन प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

**भोजन में करें यह परिवर्तन**

आयुर्वेद कहता है, जैसा अन्न, वैसा मन और तन। इसलिए सांस से जुड़ी समस्याओं से बचने के लिए भोजन में सुधार करना अनिवार्य है। गुनगुना पानी पिएं। ठंडा पानी और बर्फीली चीजें कफ बढ़ाती हैं। भोजन हल्का और पचने योग्य हो, ज्यादा तेल-मसाले वाले खाने से बचें। कफ बढ़ाने वाले आहार से परहेज करें। दही, केला, फ्रिज का खाना और मीठा सीमित मात्रा में लें। हल्दी वाला दूध रात में लें। हल्दी में एंटीसेप्टिक गुण होते हैं, जो गले और फेफड़ों को संक्रमण से बचाते हैं। सांस की बीमारियां केवल दवाओं से नहीं, बल्कि जीवनशैली सुधार और प्राकृतिक चिकित्सा से भी ठीक की जा सकती हैं। आयुर्वेद न केवल शरीर की बीमारियों को ठीक करता है, बल्कि जीवन को संतुलन और शांति भी देता है। आज की तेज रफ्तार ज़िंदगी में अगर हम आयुर्वेद के सरल उपायों को अपनाएं, तो हम खुद को और अपने परिवार को सांस की गंभीर बीमारियों से बचा सकते हैं।





# संत मलूकदास का दिव्य प्रकाश



## आध्यात्मिक ज्ञान का दीपक

भारत की पवित्र आध्यात्मिक परंपरा में संत मलूकदास एक चमकते तारे की तरह हैं, जो भक्ति और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग रोशन करते हैं। सत्रहवीं शताब्दी में प्रयाग के ऐतिहासिक कड़ा गाँव में जन्मे, वे अपने युग के महान संतों में से एक थे। मुगल सम्राट शाहजहाँ और औरंगजेब के समकालीन, संत मलूकदास को न केवल उनके गहन आध्यात्मिक चिंतन के लिए, बल्कि उनके चमत्कारिक कार्यों के लिए भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने सम्राटों और साधारण जनो के हृदय को छू लिया। उनका जीवन परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण का जीवंत प्रमाण था, जिसमें निर्गुण दर्शन को अटूट विश्वास के साथ जोड़ा गया, जिन्हें वे प्रेमपूर्वक आत्माराम निरंजन साहिब कहते थे। उनकी शिक्षाएँ, जो भक्ति में डूबी थीं, परमात्मा पर पूर्ण निर्भरता की प्रेरणा देती थीं, जो सभी युगों के साधकों के लिए आशा की किरण बनीं।

संत मलूकदास का योगदान एक दिव्य संगीत है, जो उनकी शिक्षाओं, कविताओं और शिष्य परंपरा के माध्यम से गूंजता है, जो उनके जीवनकाल में जयपुर, मुल्तान, नेपाल और काबुल जैसे क्षेत्रों में फली-फूली। संत साहित्य में उनके योगदान ने भारत के आध्यात्मिक चिंतन को समृद्ध किया, जिससे वे एक पूजनीय व्यक्तित्व बन गए, जिनका जीवन आज भी साधकों को शाश्वत सत्य की खोज में प्रेरित करता है।

## दिव्य जन्म और प्रारंभिक जीवन

विक्रम संवत् 1631 (1574 ई.) की वैशाख कृष्ण पंचमी को, कड़ा गाँव में, जो इतिहास और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण था, एक सम्मानित क्षत्रिय परिवार में संत मलूकदास का जन्म हुआ। उनके पिता मुदरदास, पितामह जठरमल और प्रपितामह वेणीराम अपनी भक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। बचपन से ही मलूकदास में दैवीय गुण झलकते थे। उनका कोमल हृदय करुणा और दया से भरा था, जो उनके छोटे-छोटे किंतु गहन कार्यों में प्रकट होता था। पाँच वर्ष की आयु में, गलियों में खेलते समय, वे रास्ते से काँटे हटाते, ताकि दूसरों को कष्ट न हो, जिसे देख लोग आश्चर्यचकित रह जाते। एक संत ने उनकी दैवीय आभा और लंबी भुजाओं को देखकर भविष्यवाणी की थी कि वे

या तो महान राजा होंगे या महान संत—यह भविष्यवाणी उनके आध्यात्मिक शिखर पर सत्य सिद्ध हुई।

मलूकदास का हृदय स्वाभाविक रूप से संतों की संगति की ओर आकर्षित था। उनकी उपस्थिति में उन्हें अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति होती, मानो अपने शाश्वत आत्मीय से मिलन हो गया हो। उनका जीवन परमात्मा के प्रति गहरे सम्मान से भरा था, और उनकी चिंतनशील प्रकृति उन्हें सबसे अलग करती थी, यहाँ तक कि बचपन में भी। उनके कार्य एक ऐसी आत्मा को दर्शाते थे, जो पहले से ही शाश्वत के साथ संनादित थी, और जो दूसरों को उसी दैवीय प्रकाश की ओर ले जाने के लिए नियत थी।

## सेवा और चमत्कारों का जीवन

संत मलूकदास का जीवन सेवा और समर्पण का एक दैवीय संगीत था। उनकी युवावस्था की एक मार्मिक घटना उनकी निःस्वार्थ भक्ति को दर्शाती है। जब कुछ संत उनके घर भोजन माँगने आए, तो परिवार ने सामग्री की कमी का हवाला देकर मना कर दिया। इससे मलूकदास बहुत व्यथित हुए। उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि कोई भी संत उनके द्वार से भूखा नहीं जाएगा। संतों की सेवा की और भोजन तैयार किया। संतों ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। जब परिवार को भंडार खाली मिला, तो उन्होंने मलूकदास को फटकारा, लेकिन जब भंडार की जाँच की गई, तो वह चमत्कारिक रूप से फिर से भरा हुआ था—यह परमात्मा की कृपा का प्रमाण था।

युवावस्था में मलूकदास अपने पिता, जो एक साधारण कंबल व्यापारी थे, की मदद करते थे। बाजार में कंबल बेचने जाते समय, वे अक्सर अपनी कमाई संतों को दे देते, क्योंकि उनका हृदय सांसारिक मोह से अछूता था। एक बार, जब वे कोई कंबल नहीं बेच पाए, तो भारी गठरी लेकर घर लौट रहे थे। तभी एक मजदूर, जो स्वयं भगवान का वेश था, ने एक पैसे की मजदूरी के बदले उनकी गठरी घर पहुँचाने की पेशकश की। घर पहुँचने पर मजदूर गायब हो गया। कोठरी खोलने पर वहाँ कोई नहीं था, लेकिन गठरी सुरक्षित थी। इस घटना ने मलूकदास को गहरे वैराग्य की ओर प्रेरित किया। उन्होंने तीन दिन

तक कोठरी में उपवास और ध्यान किया, और उन्हें दैवीय दर्शन की प्राप्ति हुई।

## आध्यात्मिक मार्गदर्शन और भक्ति भरी कविता

द्रविड देश के महात्मा विठ्ठलदास और संत मुरार स्वामी के प्रभाव से मलूकदास का आध्यात्मिक जीवन गहरा हुआ। उनके गुरु के प्रति उनकी भक्ति अटल थी, जैसा कि उनकी आत्मिक कविता में झलकता है:

दीन दयाल सुने जब ते, तब ते मन में कुछ ऐसी बसी है।

तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ, तुम्हरे हित की पट खेचि कसी है।

तेरो ही आसरो एक मलूक, नहीं प्रभु सो कोउ दूजो जसी है।

ए हो मुरार पुकार कहाँ, अब मेरी हँसी नहीं तेरी हँसी है।

इसका भाव है: “जब से तुम्हारी करुणा सुनी, मेरा मन तुममें बस गया है। तुम्हारे प्रेम में बंधा मैं कहाँ जाऊँ? तुम ही मेरा एकमात्र आश्रय हो। हे मुरार, मेरा आनंद तुम्हारा ही है।” उनकी कविताएँ, भक्ति और ज्ञान का मिश्रण, गुरु की कृपा से माया के भ्रम को जीतने की बात कहती हैं:

जीती बाजी गुरुप्रतापते, माया मोह निवार।

कह मलूक गुरु कृपा ते, उतरा भवजल पार।

(“गुरु की कृपा से मैंने माया का भ्रम जीता। मलूक कहते हैं, गुरु की कृपा से मैं भवसागर पार कर गया।”)

उनकी रचनाएँ आत्म-साक्षात्कार, वैराग्य और प्रेम के माध्यम से निर्गुण की खोज का मार्ग दिखाती हैं।

## चमत्कार और सामाजिक प्रभाव

संत मलूकदास का जीवन दैवीय चमत्कारों से सुशोभित था। एक बार अकाल में जब फसलें नष्ट हो गईं, तो उन्होंने और उनके शिष्य लालदास ने अनुष्ठान कर वर्षा कराई, जिससे जनता का दुख दूर हुआ। उनकी करुणा आध्यात्मिक शिक्षाओं से परे थी।

सम्राट औरंगजेब, उनकी पवित्रता से प्रभावित होकर, उन्हें आगरा बुलाया। मलूकदास अपनी सिद्धियों से क्षभर में दरबार में प्रकट हुए और रात को कड़ा लौट आए। उनके

प्रभाव से औरंगजेब ने कड़ा के हिंदुओं पर जजिया कर हटा दिया और जनता को कई सुविधाएँ दीं। मलूकदास ने सम्राट को उनके दूतों को सूबेदार बनाने और उन्हें दोबारा न बुलाने का आदेश दिया, जिसका औरंगजेब ने पालन किया। एक दूत ने सांसारिक मोह छोड़कर उनके चरणों में शरण ली।

## वैराग्य और दैवीय मिलन

पत्नी और पुत्री के देहांत के बाद, मलूकदास पूर्ण वैराग्य में रंग गए। उनका जीवन भगवद्भजन और सत्संग में बीता। उनकी शिक्षाएँ करुणा, भक्ति और सुख-दुख में समता पर जोर देती थीं:

## दाया करै धरम मन राखै, घर में रहें उदासी।

अपना सा दुख सब का जाने, ताहि मिलै अविनासी।  
(“करुणा करो, धर्म को हृदय में रखो, और संसार में उदासीन रहो। जो दूसरों का दुख अपना समझे, उसे अविनाशी की प्राप्ति होती है।”) उन्होंने भगवान के नाम के जप पर बल दिया, यह कहते हुए कि मानव जीवन भगवद्भजन के लिए है।

## विरासत और अंतिम दिन

संत मलूकदास की रचनाएँ, जैसे ज्ञान बोध, रतन खान, पुरुष विलास, दस रत्न ग्रंथ, और गुरु प्रताप, निर्गुण परंपरा को समृद्ध करती हैं। अपने निधन के छह मास पूर्व, उन्होंने अपने भतीजे रामस्नेही को उत्तराधिकारी घोषित किया। विक्रम संवत् 1739 (1682 ई.) की वैशाख कृष्ण चतुर्दशी को, 108 वर्ष की आयु में, वे ब्रह्म में लीन हो गए। उनके निर्देशानुसार, उनका शरीर गंगा में प्रवाहित किया गया, जो चमत्कारिक रूप से जगन्नाथ पुरी के तट पर पहुँचा। भगवान जगन्नाथ के आदेश से उनकी समाधि मंदिर के पास बनी, जहाँ आज भी उनके नाम का रोटी प्रसाद के रूप में दिया जाता है।

## मलूकदास का शाश्वत प्रकाश

संत मलूकदास भारत के आध्यात्मिक परिदृश्य में एक चमकदार प्रकाश हैं। उन्होंने हर हृदय में परमात्मा का दर्शन किया और मानवता को प्रेम, वैराग्य और सेवा के माध्यम से निर्गुण की खोज सिखाई। दादू दयाल के साथ, वे निर्गुण भक्ति के स्तंभ हैं, जो आत्माओं को शाश्वत सत्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं।



## न्याय का मंदिर या नफरत का मैदान

## दिल्ली हाई कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला



### कोर्टरूम में तूफान: एक वकील की बगावत

30 अक्टूबर 2015 का दिन। दिल्ली के कड़कड़झूमा कोर्ट में हवा भारी थी। एक महिला जज अपनी कुर्सी पर बैठी थीं, कानून की किताबों और इंसाफ के वजन के साथ। सामने खड़ा था संजय राठौर, एक वकील, जिसका चेहरा नशे में डूबा था। उसकी आँखों में गुस्सा और जुबान पर गालियाँ। जब जज ने बताया कि उसका केस अगले दिन के लिए टल गया, राठौर भड़क गया। उसने जज की टेबल पर मुक्का मारा, उनकी तरफ बढ़ा, और ऐसी गंदी बातें बोलीं कि कोर्टरूम सन्न रह गया। यह सिर्फ एक जज पर हमला नहीं था—यह था न्याय के मंदिर पर धब्बा।

यह सीन कोई फिल्म का ड्रामा नहीं था। यह असल जिम्मेदारी को तार-तार कर दिया। दिल्ली हाई कोर्ट ने 27 मई 2025 को इस मामले में फैसला सुनाया। जज स्वरना कांता शर्मा ने साफ कहा, “न्याय अंधा हो सकता है, लेकिन चुप नहीं।” संजय राठौर को धमकी देने, अभद्र भाषा बोलने और एक महिला जज की बेइज्जती करने के लिए सजा दी गई। सजा भी ऐसी कि एक साथ चले, न कि बारी-बारी। यह फैसला सिर्फ एक वकील की सजा नहीं, बल्कि इंसाफ के सिस्टम की ताकत का ऐलान था।

### औरत, जज, और समाज का सच

संजय राठौर ने उस दिन सिर्फ एक जज को नहीं, बल्कि एक औरत को टारगेट किया। उसकी गालियाँ और धमकियाँ सिर्फ कोर्ट की कुर्सी तक नहीं, बल्कि उस औरत की गरिमा तक गईं। दिल्ली हाई कोर्ट ने इसे “सिस्टम की

कमजोरी” कहा। लेकिन यह कमजोरी क्या है? यह है वह समाज, जहां औरत को जज की कुर्सी पर देखकर भी कुछ लोग उसका सम्मान नहीं करते। भारत में हाई कोर्ट्स में सिर्फ 11-13% जज औरतें हैं (2023-2024 डेटा)। इतनी कम संख्या में, जो औरतें इस मुकाम तक पहुँचती हैं, उन्हें कितनी ताकत और हिम्मत चाहिए होगी?

यह पहला मामला नहीं था। अप्रैल 2025 में दिल्ली के ही एक कोर्ट में एक रिटायर्ड टीचर और उसके वकील ने एक और महिला जज को धमकी दी थी। ऐसे मामले बताते हैं कि औरतों को, खासकर जो ताकतवर पोजीशन में हैं, आज भी निशाना बनाया जाता है। @NH\_India ने X पर लिखा, “यह सिर्फ एक वकील का गुस्सा नहीं, यह मर्दवादी सोच का हमला है।” और यह सच है। जब एक औरत जज की कुर्सी पर बैठती है, तो वह सिर्फ कानून की रक्षा नहीं करती, बल्कि समाज की पुरानी सोच से भी जंग लड़ती है।

राठौर का बिहेवियर हमें एक सवाल पूछने पर मजबूर करता है: क्या हमारा समाज सचमुच औरतों को बराबरी देता है? या फिर यह बराबरी सिर्फ कागजों पर है? कोर्ट ने राठौर को सजा देकर एक मिसाल कायम की, लेकिन असली बदलाव तब आएगा, जब हमारी सोच बदलेगी।

### वकील या विलेन: कोर्ट की गरिमा पर सवाल

वकील को कोर्ट का सिपाही माना जाता है। वह कानून का हिस्सा है, जो इंसाफ की राह बनाता है। लेकिन जब वही वकील कोर्ट की मर्यादा तोड़े, तो क्या? संजय राठौर ने उस दिन नशे में सिर्फ एक जज को नहीं,

बल्कि पूरे सिस्टम को चैलेंज किया। उसने टेबल पर मुक्का मारा, गालियाँ दीं, और कोर्टरूम को जंग का मैदान बना दिया। दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि यह सिर्फ एक औरत की बेइज्जती नहीं, बल्कि “न्याय के सिस्टम पर हमला” था।

वकीलों से उम्मीद की जाती है कि वे मिसाल बनें। लेकिन राठौर जैसे लोग इस उम्मीद को तोड़ते हैं। यह पहला मामला नहीं है। लखनऊ में एक वकील को झूठे केस दाखिल करने की सजा मिली। मध्य प्रदेश में एक जज को वकीलों और पुलिस को सजा देने के लिए बर्खास्त किया गया। ये मामले बताते हैं कि कोर्ट में अनुशासन की जरूरत है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया को ऐसे वकीलों पर सख्ती करनी होगी—शायद राठौर का लाइसेंस रद्द हो, जैसा कि लखनऊ के केस में सुझाया गया था।

लेकिन सवाल सिर्फ सजा का नहीं है। सवाल यह है कि क्या हम अपने वकीलों को सही ट्रेनिंग दे रहे हैं? क्या कोर्ट में उनकी बिहेवियर की निगरानी हो रही है? राठौर नशे में कोर्ट पहुँचा—यह कैसे मुमकिन हुआ? क्या कोर्ट में कोई चेकिंग सिस्टम होना चाहिए, जैसे नशे की जाँच? ये सवाल हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि इंसाफ का मंदिर कितना सुरक्षित है।

### उम्मीद की किरण: इंसाफ की जीत

फिर भी, इस कहानी में उम्मीद है। दिल्ली हाई कोर्ट का फैसला सिर्फ एक सजा नहीं, बल्कि एक मेसेज है। यह मेसेज है कि कोई भी कानून से ऊपर नहीं। चाहे वह

वकील हो या कोई और, कोर्ट की मर्यादा तोड़ने की कीमत चुकानी पड़ेगी। जज स्वरना कांता शर्मा ने अपने फैसले में लिखा, “न्याय का मंदिर हर उस शख्स की रक्षा करेगा, जो इंसाफ की राह पर चलता है।” यह लाइन सिर्फ एक जज की नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की ताकत दिखाती है।

यह फैसला औरतों के लिए भी एक जीत है। यह बताता है कि चाहे कितनी मुश्किलें हों, कानून उनकी हिफाजत करेगा। लेकिन यह जीत पूरी नहीं है। हमें चाहिए कि कोर्ट में सिक्योरिटी बढ़े। वकीलों के लिए एथिक्स की ट्रेनिंग हो। समाज में जागरूकता आए कि औरतें सिर्फ जज, वकील, या ऑफिसर नहीं—वे इंसान हैं, जिनका सम्मान जरूरी है।

आज, जब हम इस केस को देखते हैं, तो यह हमें एक दर्शन की तरह लगता है। इंसाफ सिर्फ सजा देना नहीं, बल्कि समाज को बेहतर बनाना है। संजय राठौर की सजा एक कदम है, लेकिन असली मंजिल तब आएगी, जब कोर्टरूम सचमुच इंसाफ का मंदिर बनेगा—जहां न नफरत हो, न डर, सिर्फ बराबरी और सम्मान।

यह कहानी हमें याद दिलाती है कि इंसाफ की लड़ाई सिर्फ कोर्ट में नहीं, बल्कि हमारे दिलों में भी लड़ी जाती है। हर बार जब हम किसी औरत का सम्मान करते हैं, हर बार जब हम कानून की मर्यादा रखते हैं, हम उस मंदिर को और मजबूत करते हैं। तो आइए, इस फैसले को सेलिब्रेट करें, लेकिन यह भी वादा करें कि हम एक ऐसे समाज के लिए काम करेंगे, जहां कोर्टरूम में सिर्फ इंसाफ की आवाज गूँजे।



# नृत्य और रुदन दूर करते हैं रोग

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि रोगों से दुख आंसुओं के माध्यम से बह जाता है। रुदन एक ऐसी प्रक्रिया है कि जिसके द्वारा रोग निवारण होता है। जब कोई तनावग्रस्त होता है तब उसको रोना चाहिए। यदि रोग न भी आए तो नाटकीय रुदन करना चाहिए जो धीरे-धीरे वास्तविक रूप ले लेगा। आप रोएंगे तो आपके जितने भी विगलित व दूषित भाव होंगे वे बाहर निकलेंगे और यही रोग निवारण का कारण बनेगा। इसी प्रकार नृत्य करने से भी रोग निवारण होता है। नाचने से शारीरिक व्यायाम तो होता ही है आत्मिक शांति भी प्राप्त होती है। इससे तन स्वस्थ होता है और मन भी स्फूर्त हो जाता है। जितने भी आंदोलित करने वाले विचार हैं वे खत्म होते हैं और ऊर्जावान विचारधारा का संचार होता है। इसलिए रोइए भी और नाचिए भी।

**सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में नहीं है कोई अंतर**

मुझसे पूछा गया कि कलियुग में जब कोई किसी की हत्या करता है या चोरी करता है, आपके कहे अनुसार परमात्मा है तो वह क्यों नहीं रोकता ? मैंने उनसे कहा कि यह संसार एक समुद्र की तरह है। इसमें रहने वाले हम मछलियों के समान हैं। जब एक मछली दूसरी को खाती है तो क्या समुद्र उसे रोकता है? सभी मछलियां समुद्र का ही हिस्सा हैं तो उसमें विलीन हो जाती हैं अर्थात् पानी में ही समा जाती हैं। परमात्मा इसमें क्या कर सकता है कि जब कोई उसके द्वारा सृजित मनुष्य दूसरे की हत्या कर देता है, उसके लिए चोर, डाकू, नेता सभी एक समान हैं। उन्होंने कहा कि कलियुग अब समाप्त होने वाला है, सतयुग आने वाला है, अब युद्ध नहीं होंगे और शांति तथा सद्भाव होगा। मैंने कहा कि सतयुग में भी सूर व असुर दो वर्गों में युद्ध होता था जबकि वे एक पिता और दो माताओं दिति और अदिति के पुत्र थे, जिन्हें देवता व दैत्य कहा जाता था। इसी प्रकार त्रेता में भी आर्यों व राक्षसों में शत्रुता थी और भगवान श्रीराम को उनका संहार करना पड़ा। इसी प्रकार द्वापर में पांडवों व कौरवों में युद्ध हुआ जो कि भाई-भाई ही थे तो आप कौन से सतयुग के आने बात कर रहे हैं?

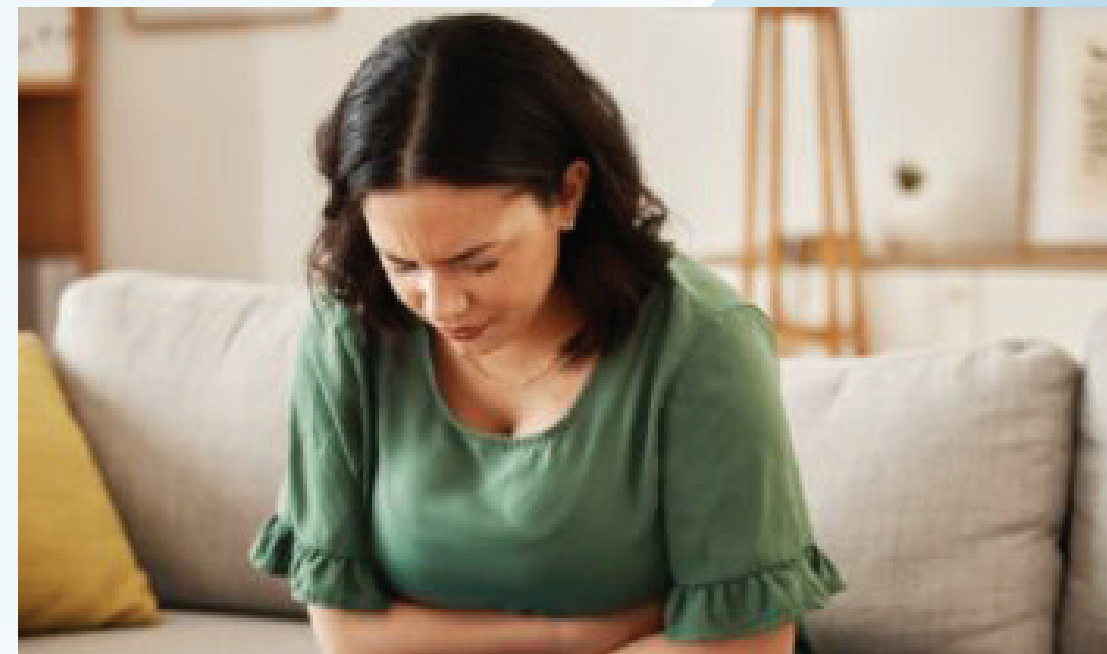
**पूज्य है योनि**

भगवान शिव ने मां पार्वती से कहा है कि योनि का पूजन करना चाहिए। दुर्गा सप्तशती में मां दुर्गा ने कहा है कि मैं 'भग' को धारण करती हूँ। अर्थात् मैं इस सृष्टि

की योनि हूँ। हम जो भी हैं वह योनि के कारण हैं, अपने पिता के लिंग से हैं। मां दुर्गा ही सबको उत्पन्न करने वाली हैं। इसी योनि से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न किया है। योनि न हो तो कोई पैदा ही नहीं होगा। योनि पावन है, इसे वासना की दृष्टि से और भोग की दृष्टि से जो देखते हैं वे अज्ञानी हैं। योनि का अर्थ है-पतित पावन। सारे जगत की जननी है योनि। इसी प्रकार लिंग के न होने से कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री, डाक्टर, वैज्ञानिक नहीं बन सकता। इसके न होने से शुक्र का प्रभाव कम हो जाता है। योनि न हो तब भी कोई स्त्री मातृत्व को प्राप्त नहीं कर सकती। योनि की औषधि सर्वप्रथम भगवान शिव ने उत्पन्न की थी। दुर्गा सप्तशती में लिखा है कि स्त्रियों में जो भी सौभाग्य है

वह देवी के प्रसाद का फल है। भगवान शिव ने कहा है कि रोगों के लिए और अन्य कार्यों के लिए किसी मंत्र, औषधि तथा साधना की जरूरत नहीं है केवल मां दुर्गा का पाठ करें।

इस योनि के संक्रमण और रोगी होने से नारी का समूचा अस्तित्व तिरोहित हो जाता है। इसलिए भगवान शिव ने इसकी औषधि उत्पन्न की जिसे 'शिवाम्बु' भी कहा जाता है। 'वी मिरिकल वाश' औषधि इसी उद्देश्य से तैयार की गई है जिसमें किसी प्रकार का कोई केमिकल या साल्ट नहीं है, यह 'शिवाम्बु' की तरह 'दैवव्यपश्रय' है। जब सारी दवाइयां असफल हो जाती हैं तब यह चमत्कारिक ढंग से योनि के इस भयंकर रोग को समाप्त कर देता है।



है।

**ब्रह्मांड में महाब्रह्म था सबसे पहले**

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि इस सृष्टि में महाब्रह्म सबसे पहले था। इसका किसी को ज्ञान नहीं था। मां दुर्गा ने सबसे पहले महाब्रह्मर्षियों को ज्ञान प्रदान किया। यह ज्ञान मन, चित्त, बुद्धि से पार है। जितना बड़ा अहंकार होता है उतनी ही परमात्मा से दूरी हो जाती है। जितनी बड़ी विनम्रता, स्नेह, प्यार, भक्ति होती है, उतनी ही परमात्मा से निकटता होती है। पृथ्वी पर आना बहुत बड़ी सजा मानी जाती है। देव लोक में जब सजा सुनाई जाती है तो सर्प, स्त्री, जानवर आदि की योनियां प्राप्त होती हैं और पृथ्वी पर आना पड़ता है। यह भी सजा है कि जिसे बड़ा बना कर पृथ्वी पर भेजा जाता है और वह पृथ्वी पर आकर ज्ञान से वंचित होकर दुख उठाता है। महाब्रह्म ने ही चन्द्रमा, सूरज, तारे व पृथ्वी बनाई। आप कल्पना नहीं कर सकते कि एक मिनट में कितनी ही पृथ्वियों, ग्रहों व नक्षत्रों का निर्माण मां दुर्गा करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसे मानता है कि असीम अंतरिक्ष में रोज असंख्य ग्रह-नक्षत्र बनते बिगड़ते रहते हैं।

हमारा हवाई जहाज एक मिनट में कुछ मील उड़ सकता है लेकिन महाब्रह्म मां दुर्गा का विमान मन की गति से उड़ता है। मां दुर्गा जीवधारी शरीरों को पैदा करती जा रही है और उसी अनुपात में मरते भी जा रहे हैं। यह स्थिति है कि आदमी और जीवों को रहने की जगह भी नहीं मिल रही है। इतने कीटाणु हो गए हैं जो वायरल और फंगल बन कर आदमियों को खा रहे हैं। अभी हम आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड गए तो वहां देखा कि हर स्त्री और बच्चे को प्रारब्लम थी, जो एक प्रकार का पागलपन है।

**अवधान का महारहस्य**

अवधान अपरा से परा में जुड़ने की प्रक्रिया है। हम जब अपने सभी विचारों को भूलकर निर्निमेष तथा विचारहीन होकर निराकार और निर्गुण की तरफ अपनी मनन शक्ति को मोड़ देते हैं तब अवधान की प्रक्रिया के माध्यम से हम सभी विकारों, रोगों व कष्टों से मुक्त हो जाते हैं। चाहे वह दैहिक दुख है अथवा मानसिक दुख है। हम अपरा से मुक्त होकर परा के आनंद की अनुभूति करने लगते हैं तथा मन, बुद्धि, अहंकार से पार चले जाते हैं। अवधान के लिए अपने अस्तित्व को भूल जाना होता

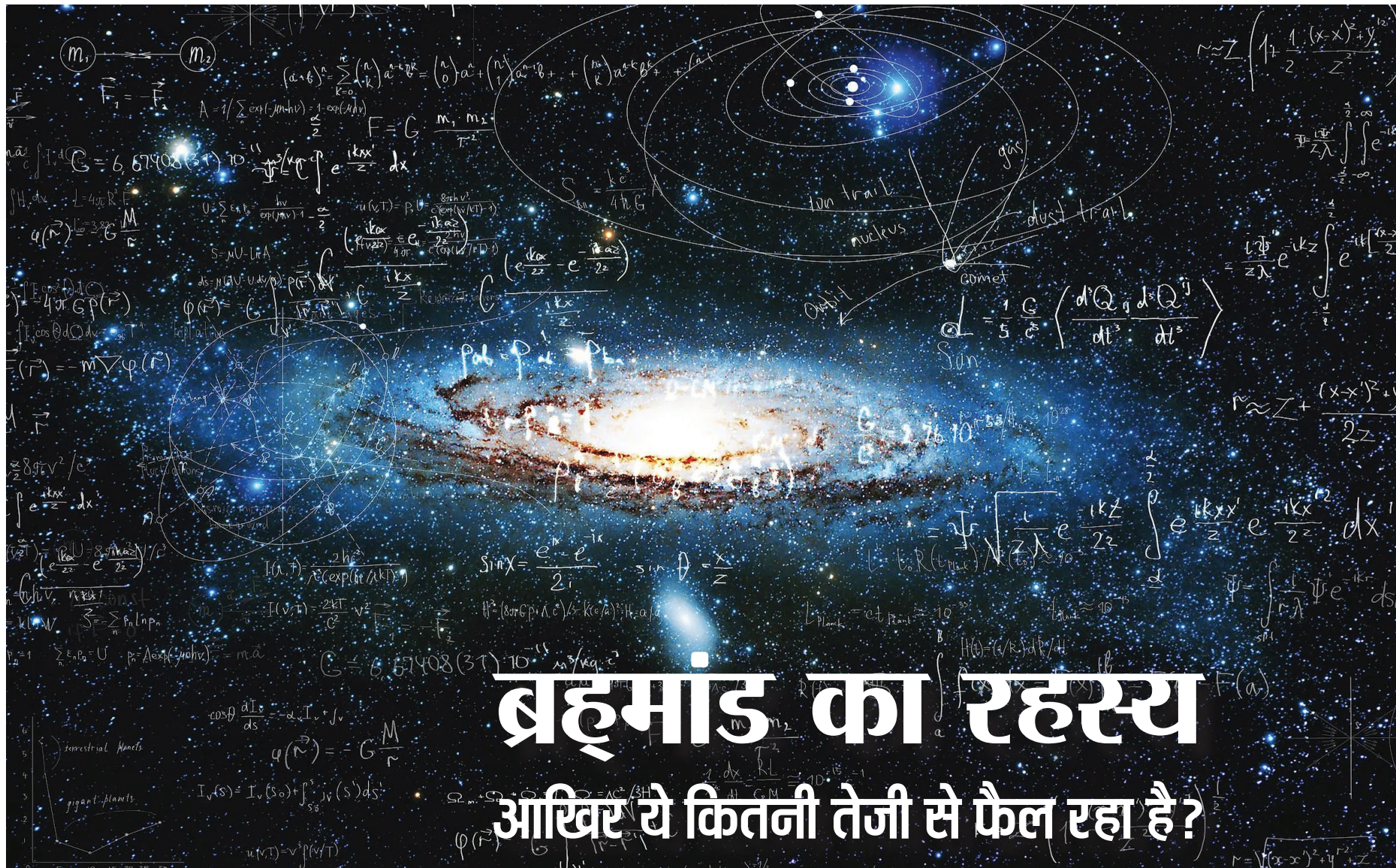
अपनी समस्याओं आदि से ध्यान हटा कर शरीर को ढीला छोड़कर, जीभ को तालु से लगाकर, ध्यानावस्था में जाना होता है। यह अवधान किसी धर्म व जाति विशेष का नहीं है। इसका संबंध किसी हिन्दू, सिख, मुसलमान व ईसाई से नहीं है वरन यह संपूर्ण मानव जाति का है। इसके दौरान साधक योग निद्रा में सो जाता है और परा की ओर अग्रसर हो जाता है। पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, अपरा के तत्वों से विलग हो जाता है। ये ही तत्व हमारे शारीरिक और मानसिक रोगों और कष्टों के लिए जिम्मेदार होते हैं। जब इनसे मुक्ति हो जाती है तो रोग, कष्ट व समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। ये अपरा तत्व पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि, अहंकार; हमारे आठ पदें हैं। इनके हटते ही ईश्वर, अल्लाह, गॉड, प्रकट हो जाते हैं जो 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' है। अर्थात्- बिनु पगु चले सुने बिनु काना, कर बिनु करम करे विधि नाना।

**निर्गुण और सगुण का भेद**

निर्गुण गुणातीत है, सत, रज, तम से पार है। सगुण में रूप, रस, गंध है। सगुण रूप में भगवान भक्तों के उद्धार के लिए अवतार लेते हैं, जन्म लेते हैं। भगवान हनुमान ने भगवान श्रीराम जी से पूछा कि हे प्रभु आपको कौन सी भक्ति सर्वोपरि है-निर्गुण या सगुण। भगवान श्रीराम जी ने कहा कि यदि तुम मेरी सगुण भक्ति करोगे तो भौतिक सुख संसाधन प्राप्त करोगे। तुम धनवान बन जाओगे, राजा बन जाओगे, बड़े पद कीर्ति और यश प्राप्त कर लोगे। निर्गुण भक्ति करने से तुम महा योगीराज बन जाओगे, महा विद्वान बन जाओगे। इसलिए मेरी निर्गुण भक्ति ही सर्वोपरि और श्रेष्ठ है।

संसार में जो भी दिखाई देता है वह मिथ्या है-जो दीखे सो सकल विनाशी, ज्यों बादल की छाई। अतः सगुण भक्ति से तुम यदि राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, मुख्यमंत्री, बड़े अधिकारी बन भी जाओगे तो यह सब क्षणिक है। अपरा भक्ति से प्राप्त सुख भी मिथ्या है, नष्ट होने वाला है। परा अर्थात् सगुण की भक्ति से ही मोक्ष व परमानंद की प्राप्ति होती है। बार-बार जन्म लेने से मुक्त हो जाओगे। निर्गुण भक्ति से पुनः जन्म नहीं होगा।





**ज**ब रात को आसमान की तरफ देखते हैं, तो तारे और आकाशगंगाएँ हमें कितने सुंदर लगते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि ये सारी आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से दूर क्यों जा रही हैं? जैसे कोई गुब्बारा फूल रहा हो, और उस पर बनी बिंदियाँ एक-दूसरे से दूर होती जा रही हों। वैज्ञानिक इस “फैलाव” को नापने की कोशिश कर रहे हैं, और इसे हबल कॉन्स्टेंट कहते हैं—यानी ब्रह्मांड का स्पीडोमीटर। लेकिन यहाँ एक ट्विस्ट है: वैज्ञानिकों को इस स्पीड का सही जवाब नहीं मिल रहा! इसे हबल टेंशन कहते हैं, और ये एक ऐसा रहस्य है जो ब्रह्मांड की पूरी कहानी बदल सकता है।

इस कहानी का हीरो है एडम रीस, एक वैज्ञानिक जिन्होंने 27 साल की उम्र में पता लगाया था कि ब्रह्मांड ना सिर्फ फैल रहा है, बल्कि उसकी स्पीड बढ़ भी रही है। इस खोज के लिए उन्हें 2011 में नोबेल प्राइज मिला। लेकिन अब, 55 साल की उम्र में, वो खुद अपने पुराने काम पर सवाल उठा रहे हैं। क्यों? क्योंकि उनके नए मेजरमेंट्स बता रहे हैं कि ब्रह्मांड की स्पीड कुछ और है, जो दूसरों के मेजरमेंट्स से मेल नहीं खाती। आइए, इस कॉस्मिक पहली को समझते हैं और देखते हैं कि ये हमारे लिए क्यों मायने रखता है।

### ब्रह्मांड की स्पीड का झगड़ा

कल्पना करें कि आप एक गाड़ी की स्पीड नाप रहे हैं। आपका रडार गन कहता है कि गाड़ी 74 किलोमीटर प्रति घंटा चल रही है, लेकिन आपका GPS बोलता है कि स्पीड सिर्फ 67 है। दोनों सही कैसे हो सकते हैं? कुछ ऐसा ही झगड़ा ब्रह्मांड की स्पीड नापने में हो रहा है। वैज्ञानिक इस स्पीड को हबल कॉन्स्टेंट (H) कहते हैं,

जो बताता है कि आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से कितनी तेजी से दूर जा रही हैं। इसे किलोमीटर प्रति सेकंड प्रति मेगापार्सेक (km/s/Mpc) में नापते हैं। एक मेगापार्सेक यानी करीब 32.6 लाख लाइट-ईयर।

एडम रीस और उनकी टीम ने हबल स्पेस टेलीस्कोप और जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) का इस्तेमाल करके नापा कि ब्रह्मांड की स्पीड करीब 73–74 km/s/Mpc है। उन्होंने ये मेजरमेंट “कॉस्मिक डिस्टेंस लैडर” से किया। ये क्या है? पहले वो पास के तारों की दूरी नापते हैं, जैसे आप अपने घर से बाजार की दूरी नापते हैं। फिर वो सेफ़ियड तारे—जो कॉस्मिक लाइटहाउस की तरह टिमटिमाते हैं—उनसे पास की आकाशगंगाओं की दूरी नापते हैं। आखिर में, वो सुपरनोवा (विस्फोट करने वाले तारे) से दूर की आकाशगंगाओं तक की दूरी मापते हैं।

लेकिन दूसरी तरफ, कुछ वैज्ञानिक कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (CMB) का इस्तेमाल करते हैं। CMB वो रोशनी है जो बिग बैंग के समय की है, जैसे ब्रह्मांड का बेबी फोटो। इस डेटा से वो मॉडल बनाते हैं, जिसे लैम्ब्डा-CDM कहते हैं, और कहते हैं कि स्पीड 67.4 km/s/Mpc है। दोनों नंबरों में 6–7 का फर्क है, और ये फर्क इतना बड़ा है कि इसे इग्नोर नहीं कर सकते। वैज्ञानिक कहते हैं कि ये अंतर 4–6 सिग्मा पर है, यानी इसके गलत होने की संभावना बहुत कम है। तो, क्या ब्रह्मांड की रूल बुक में कुछ गलत है?

### रीस: नोबेल विजेता से सवाल उठाने वाला

एडम रीस की कहानी किसी फिल्म जैसी है। 27 साल की उम्र में उन्होंने सुपरनोवा की स्टडी करके पता लगाया कि ब्रह्मांड की स्पीड बढ़ रही है, और इसके पीछे है डार्क

एनर्जी—एक रहस्यमयी ताकत। इस खोज ने पूरी दुनिया को चौंका दिया, और रीस को नोबेल प्राइज दिलाया। लेकिन अब, वो खुद कह रहे हैं कि हमारा ब्रह्मांड का मॉडल शायद गलत है। उनकी नई मेजरमेंट्स इतनी सटीक हैं कि गलती की गुंजाइश लगभग खत्म है। जेम्स वेब टेलीस्कोप ने भी उनके नंबरों को कन्फर्म किया।

रीस की बात का वजन है, क्योंकि वो हर स्टेप को बार-बार चेक करते हैं। लेकिन कुछ वैज्ञानिक, जैसे वेंडी फ्रीडमैन, कहते हैं कि शायद हमें और डेटा चाहिए। फ्रीडमैन ने रेड जायंट तारों से नापा और उन्हें 69.8 km/s/Mpc मिला—रीस और CMB के बीच का नंबर। दूसरी तरफ, सीन कैरोल जैसे वैज्ञानिक कहते हैं कि लैम्ब्डा-CDM मॉडल ने अब तक सबकुछ सही बताया है, तो इसे फेंकने की जल्दी क्यों? ये डिबेट साइंस की ताकत है—हर कोई एक-दूसरे के काम को चैलेंज करता है, ताकि सच सामने आए। लेकिन रीस का मानना है कि ये टेंशन हमें कुछ नया सिखा सकती है।

### ये टेंशन इतनी बड़ी डील क्यों है?

सोचिए, अगर आपकी रिसिपी बुक में केक बनाने का तरीका गलत हो, तो केक कभी सही नहीं बनेगा। लैम्ब्डा-CDM हमारी ब्रह्मांड की रिसिपी बुक है। इसमें लिखा है कि ब्रह्मांड में 68% डार्क एनर्जी, 27% डार्क मैटर, और 5% नॉर्मल मैटर (जैसे तारे, ग्रह) है। अगर हबल टेंशन सही है, तो शायद इस रिसिपी में कुछ छूट गया है। क्या हो सकता है?

**नई फिजिक्स:** हो सकता है कि बिग बैंग के तुरंत बाद कोई अली डार्क एनर्जी थी, जो थोड़े समय के लिए ब्रह्मांड को तेजी से फैलाती थी।

**गलत मेजरमेंट:** शायद मेजरमेंट्स में कोई छोटी गलती है, हालाँकि रीस का डेटा इतना सॉलिड है कि ये मुश्किल लगता है।

**अनजान स्ट्रक्चर:** हो सकता है कि ब्रह्मांड में कोई बड़ी स्ट्रक्चर हों, जो मेजरमेंट्स को प्रभावित कर रहे हों।

अगर ये टेंशन सही है, तो इसका मतलब है कि ब्रह्मांड की कहानी—उसका जन्म, उसका फैलाव, और उसका अंत—शायद वैसी नहीं है जैसी हम सोचते हैं। क्या ब्रह्मांड हमेशा फैलता रहेगा? या फिर कभी रुक जाएगा? ये सवाल सिर्फ साइंस के नहीं, बल्कि हमारे अपने वजूद से जुड़े हैं। हमारा ग्रह, हमारी आकाशगंगा, सब इस बड़े कॉस्मिक ड्रामे का हिस्सा हैं।

### आगे क्या? सितारों की तलाश जारी है

हबल टेंशन कोई गलती नहीं, बल्कि एक मौका है। वैज्ञानिक अब नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं। जेम्स वेब टेलीस्कोप पहले ही रीस के नंबरों को सपोर्ट कर चुका है। जल्द ही, नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप लॉन्च होगा, जो ब्रह्मांड के फैलाव और डार्क एनर्जी को और करीब से देखेगा। ये टेलीस्कोप्स हमें और डेटा देंगे, और शायद इस पजल का जवाब मिल जाए।

साइंस का मजा यही है—हर सवाल हमें कुछ नया सिखाता है। रीस और उनके साथी इस रहस्य को सुलझाने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। और ये सिर्फ वैज्ञानिकों की बात नहीं है। जब आप अगली बार तारों को देखें, तो सोचें: आप उस ब्रह्मांड का हिस्सा हैं जो हर पल बढ़ा हो रहा है, और उसकी स्पीड एक ऐसा रहस्य है जो हमें अपनी जगह समझने में मदद कर सकता है।



# मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का UAPA फैसला: 'मुगल व्यवस्था' और इंसाफ का सवाल

## कोर्टरूम में चौंकाने वाला फैसला

भोपाल का मध्य प्रदेश हाई कोर्ट। माहौल तनावपूर्ण। वकील वासिद खान अपनी जमानत की सुनवाई का इंतजार कर रहे हैं। वो एक ह्यूमन राइट्स वॉलंटियर हैं, जो लोगों को कानून की जानकारी देते थे। लेकिन कोर्ट का फैसला सुनकर सब हैरान रह गए। जस्टिस विवेक अग्रवाल और देवनारायण मिश्रा ने कहा कि उनके पास से मिले सामान "प्रथम दृष्टया" (पहली नजर में) दिखाते हैं कि वो सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़कर "मुगल व्यवस्था" लाना चाहते थे। ये "मुगल व्यवस्था" क्या है? एक वकील पर इतना बड़ा इल्जाम? ये कहानी सिर्फ एक केस की नहीं, बल्कि आज के भारत में कानून, इतिहास, और समाज के गहरे सवालों की है। आइए, इस मामले को समझें।

ये केस अनलॉफुल एक्टिविटीज (प्रिवेंशन) एक्ट (UAPA) के तहत है, जो भारत का सबसे सख्त कानून है। इसकी वजह से वासिद को जमानत नहीं मिली। लेकिन सवाल ये है: क्या ये इल्जाम सही हैं, या ये कानून का गलत इस्तेमाल है? इस केस में इतिहास, समाज, और इंसाफ के कई पहलू जुड़े हैं।

## UAPA का जाल और वासिद की कहानी

वासिद खान को 2023 में गिरफ्तार किया गया। उन पर UAPA और इंडियन पीनल कोड (IPC) के तहत इल्जाम लगे। इल्जाम था कि वो सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ रहे थे और "मुगल व्यवस्था" लाने की साजिश रच रहे थे। 19 मार्च, 2023 को पुलिस ने चार्जशीट दाखिल की। 8 फरवरी, 2025 को भोपाल की NIA कोर्ट ने उनकी जमानत खारिज कर दी। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने भी इस फैसले को सही ठहराया। कोर्ट ने कहा कि ट्रायल पूरा होने तक जमानत नहीं दी जा सकती।

वासिद के वकील, मोहम्मद ताहिर, ने दलील दी कि उनके मुवक्किल सिर्फ ह्यूमन राइट्स के लिए काम करते थे। वो लोगों को कानून की जानकारी देते थे, कोई गैरकानूनी काम नहीं करते थे। लेकिन कोर्ट ने ये बात नहीं मानी। UAPA का सेक्शन 43D(5) कहता है कि अगर इल्जाम "प्रथम दृष्टया" सही लगते हैं, तो जमानत नहीं मिल सकती। इसका मतलब है कि बिना ट्रायल के वासिद को जेल में रहना पड़ सकता है।

ये कानून इतना सख्त है कि जमानत मिलना लगभग नामुमकिन है। कई बार इसका इस्तेमाल उन लोगों के खिलाफ होता है जो सरकार की आलोचना करते हैं। वासिद का केस भी ऐसा ही लगता है। वो एक ह्यूमन राइट्स ऑर्गनाइजेशन के लिए काम करते थे, शायद ह्यूमन राइट्स लॉ नेटवर्क (HRLN) जैसी संस्था के साथ। उनका काम था लोगों को उनके हक बताना। लेकिन क्या ये काम इतना खतरनाक था कि उन्हें जेल में डाला जाए?

## "मुगल व्यवस्था": इतिहास या सियासत?

कोर्ट का "मुगल व्यवस्था" वाला बयान इस केस को और जटिल बनाता है। मुगल साम्राज्य (1526-1857) भारत का एक बड़ा हिस्सा था। इसमें कला, संस्कृति, और धर्म का मिश्रण था। बाबर से औरंगजेब तक, मुगलों ने



भारत पर लंबे समय तक राज किया। लेकिन आज "मुगल" शब्द को सियासत में गलत तरीके से इस्तेमाल किया जाता है। कुछ लोग इसे मुस्लिम शासन के रूप में देखते हैं और इसे आज के भारत के खिलाफ दिखाते हैं। कोर्ट ने कहा कि वासिद के पास से मिले सामान (जो हमें नहीं पता कि क्या थे) सांप्रदायिक साजिश दिखाते हैं। लेकिन बिना साफ सबूत के "मुगल व्यवस्था" जैसा बड़ा इल्जाम लगाना खतरनाक है। ये समाज में तनाव बढ़ा सकता है। मध्य प्रदेश में, जहाँ सांप्रदायिक मुद्दे पहले से संवेदनशील हैं, कोर्ट का ऐसा बयान गलत संदेश दे सकता है।

**सवाल ये है:** क्या वासिद वाकई में कोई साजिश रच रहे थे, या उनके काम को गलत तरीके से पेश किया गया? इतिहास को सियासत में इस्तेमाल करना आसान है, लेकिन इसका असर समाज पर गहरा पड़ता है। कोर्ट को ऐसे शब्दों का इस्तेमाल सावधानी से करना चाहिए। अगर सबूत साफ नहीं हैं, तो ये इल्जाम सिर्फ डर और गलतफहमी फैला सकते हैं।

## इंसाफ का सवाल और आगे की राह

वासिद खान का केस सिर्फ एक इंसान की कहानी

नहीं है। ये भारत में इंसाफ, आजादी, और समाज के सवालों की कहानी है। UAPA जैसे सख्त कानून का इस्तेमाल कई बार ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट्स, पत्रकारों, और आलोचकों के खिलाफ हुआ है। स्टेन स्वामी और उमर खालिद जैसे केस इसका उदाहरण हैं। वासिद का केस भी ऐसा ही लगता है।

UAPA के तहत जमानत न मिलने का मतलब है कि कोई इंसान बिना दोष साबित हुए सालों जेल में रह सकता है। ये हमारे संविधान के आर्टिकल 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) और आर्टिकल 19 (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता) पर सवाल उठाता है। वासिद के परिवार पर भी इसका बुरा असर पड़ता है। जेल में रहने से पैसों की तंगी, समाज में बदनामी, और मानसिक तनाव होता है।

कोर्ट का "मुगल व्यवस्था" वाला बयान भी चिंता की बात है। आज के भारत में, जहाँ सांप्रदायिक तनाव पहले से है, ऐसे शब्द समाज को और बाँट सकते हैं। कोर्ट को निष्पक्ष रहना चाहिए और ऐसे बयान देने से बचना चाहिए जो गलत संदेश दें।

## तो, आगे क्या? कुछ कदम उठाए जा सकते हैं:

**साफ सबूत की जरूरत:** UAPA के तहत इल्जाम लगाने से पहले ठोस सबूत होने चाहिए।

**तेज़ ट्रायल:** बिना ट्रायल के लंबे समय तक जेल में रखना गलत है। ट्रायल जल्दी शुरू होने चाहिए।

**निष्पक्ष जाँच:** पुलिस और NIA को बिना सियासी दबाव के जाँच करनी चाहिए।

**कोर्ट की जिम्मेदारी:** कोर्ट को ऐसे शब्दों से बचना चाहिए जो समाज में तनाव बढ़ाएँ।

वासिद खान का केस हमें सोचने पर मजबूर करता है। क्या हम एक ऐसे भारत में रहना चाहते हैं, जहाँ ह्यूमन राइट्स के लिए काम करने वालों को जेल में डाला जाए? क्या हमारा कानून इंसाफ देता है, या सिर्फ डर फैलाता है? ये सवाल हर भारतीय को सोचना चाहिए। हमें एक ऐसे समाज की जरूरत है, जहाँ हर इंसान बिना डर के अपनी बात कह सके। इसके लिए हमें मिलकर काम करना होगा—कानून में सुधार, कोर्ट में निष्पक्षता, और समाज में भाईचारा। क्या आप इसके लिए तैयार हैं?



# शी जिनपिंग की तानाशाही जारी

## टॉप मिलिट्री कमांडर को बर्खास्त कर जेल में डाला

@ रिकू विश्वकर्मा

**ची**न में हाल के वर्षों में राष्ट्रपति शी जिनपिंग की भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम ने सेना के उच्च अधिकारियों को भी नहीं बख्शा है। हाल ही में, एडमिरल मिया हुआ, जो चीन की केंद्रीय सैन्य आयोग (CMC) के सदस्य और राजनीतिक कार्य विभाग के प्रमुख थे, को गंभीर अनुशासन उल्लंघन के आरोप में निर्लंबित कर दिया गया। यह कदम चीन की सेना में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने की शी की योजना का हिस्सा माना जा रहा है।

**क्यों मिया हुआ को बर्खास्त किया गया ?**

मिया हुआ की बर्खास्तगी को शी जिनपिंग की भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम के तहत देखा जा रहा है। मिया हुआ, जो शी के करीबी सहयोगी माने जाते थे, की गिरफ्तारी से यह संकेत मिलता है कि शी अपने समर्थकों को भी भ्रष्टाचार के आरोपों से नहीं बचने दे रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम शी के सत्ता के केंद्रीकरण और सेना में अनुशासन की स्थिति को मजबूत करने के उद्देश्य से उठाया गया है।

**शी जिनपिंग की भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम के क्या मायने हैं ?**

2012 में सत्ता में आने के बाद, शी जिनपिंग ने भ्रष्टाचार के खिलाफ एक व्यापक मुहिम शुरू की थी, जिसे “शेर और मक्खी” की नीति कहा जाता है। इस नीति के तहत, उच्च स्तर के अधिकारियों से लेकर निम्न स्तर के कर्मचारियों तक सभी को भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना करना पड़ा है। अब तक, इस मुहिम में 120 से अधिक उच्च पदस्थ अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें से कई सैन्य अधिकारी भी शामिल हैं।

**चीनी सेना में भ्रष्टाचार कितना है ?**

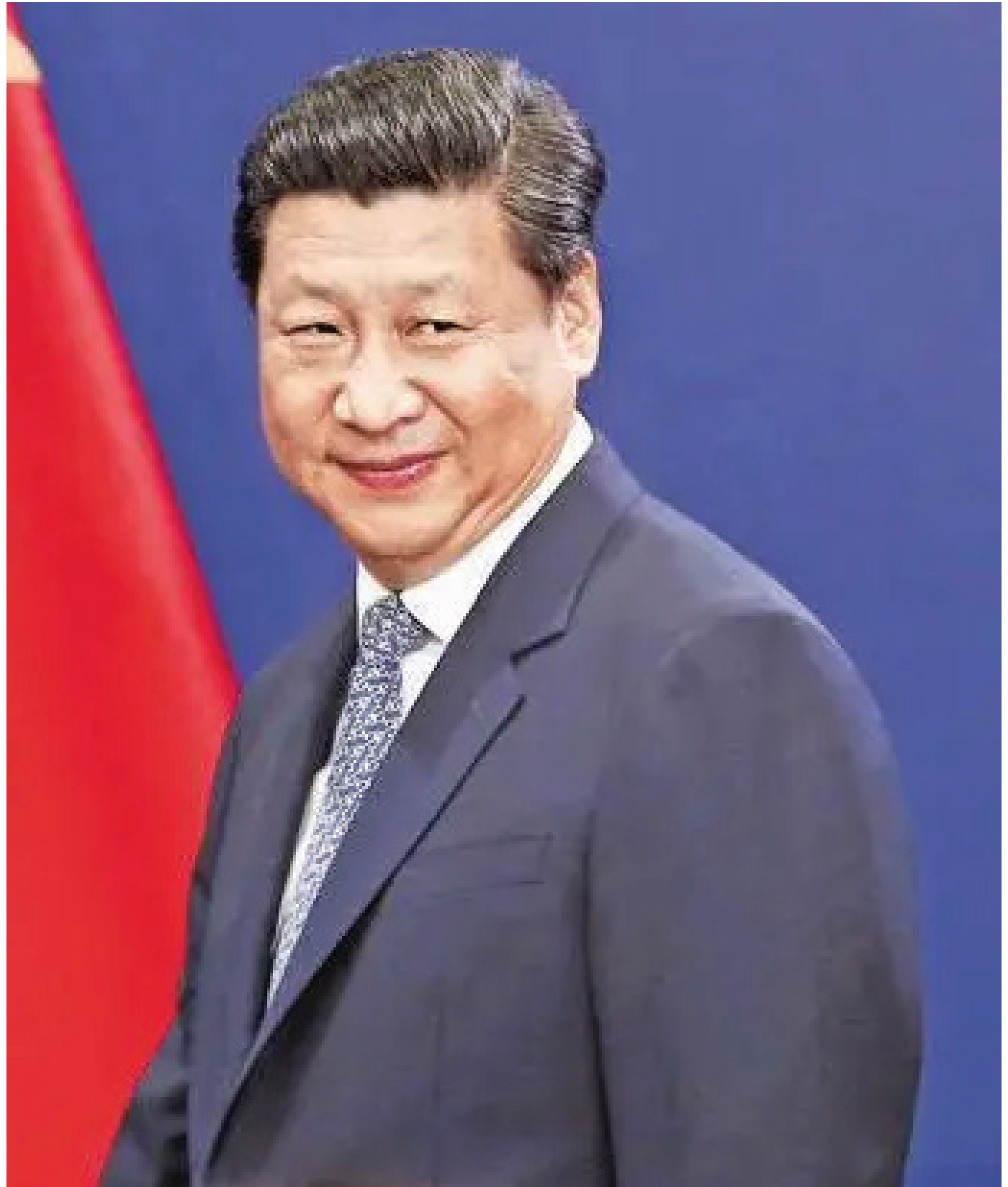
चीन की सेना, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA), में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या बन चुकी है। विशेष रूप से, रॉकेट फोर्स, जो चीन की परमाणु और मिसाइल क्षमता के लिए जिम्मेदार है, में भ्रष्टाचार के मामले सामने आए हैं। पूर्व रॉकेट फोर्स कमांडर ली युचाओ को भी भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार किया गया और पार्टी से निष्कासित किया गया।

**क्या शी सेना के भीतर अपनी पकड़ और मजबूत करना चाहते हैं ?**

मिया हुआ की बर्खास्तगी और अन्य सैन्य अधिकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई को केवल भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम के रूप में नहीं देखा जा सकता। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम शी जिनपिंग के सत्ता के केंद्रीकरण और सेना में अपने समर्थकों की तैनाती के उद्देश्य से उठाए गए हैं। इससे यह भी संकेत मिलता है कि शी सेना के भीतर अपनी पकड़ मजबूत करना चाहते हैं, ताकि भविष्य में किसी भी आंतरिक चुनौती का सामना किया जा सके।

**अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया भी आई सामने**

हाल ही में सिंगापुर में आयोजित शांगरी-ला डायलॉग 2025 में, चीन ने अपने रक्षा मंत्री डोंग जून को भेजने का



निर्णय नहीं लिया। इसके बजाय, पीएलए के राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय का एक प्रतिनिधिमंडल भेजा गया, जिसका नेतृत्व रियर एडमिरल हू गैंगफेंग ने किया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम चीन की आंतरिक राजनीतिक स्थिति और सैन्य नेतृत्व में हो रहे परिवर्तनों को दर्शाता है।

**किसी भी हद तक जा सकते हैं जिनपिंग**

शी जिनपिंग की भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम केवल एक आंतरिक सुधार प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह उनकी सत्ता के केंद्रीकरण और चीन की सैन्य शक्ति को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की रणनीति का हिस्सा है। हालांकि, इस प्रक्रिया में उठाए गए कदमों से यह भी स्पष्ट होता है

कि शी जिनपिंग अपने विरोधियों को समाप्त करने और सत्ता में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। इससे यह भी संकेत मिलता है कि चीन की आंतरिक राजनीति और सैन्य नेतृत्व में हो रहे परिवर्तनों का वैश्विक सुरक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है।



## मन बहुत सोचता है

मन बहुत सोचता है कि उदास न हो  
पर उदासी के बिना रह कैसे जाए?

शहर के दूर के तनाव-दबाव कोई सह भी ले,  
पर यह अपने ही रचे एकांत का दबाव सह कैसे जाए!

नील आकाश, तैरते-से मेघ के टुकड़े,  
खुली घास में दौड़ती मेघ-छायाएँ,

पहाड़ी नदी : पारदर्श पानी,  
धूप-धुले तल के रंगारंग पत्थर,

सब देख बहुत गहरे कहीं जो उठे,  
वह कहूँ भी तो सुनने को कोई पास न हो—

इसी पर जो जी में उठे वह कहा कैसे जाए!  
मन बहुत सोचता है कि उदास न हो, न हो,

पर उदासी के बिना रह कैसे जाए!

## क्योंकि तुम हो।

मेघों को सहसा चिकनी अरुणाई छू जाती है  
तारागण से एक शांति-सी छन-छन कर आती है

क्योंकि तुम हो।  
फुटकी की लहरिल उड़ान

शाश्वत के मूक गान की स्वर लिपी-सी संज्ञा के पट पर अंक जाती है  
जुगनू की छोटी-सी धुति में नए अर्थ की

अनपहचाने अभिप्राय की किरण चमक जाती है  
क्योंकि तुम हो।

जीवन का हर कर्म समर्पण हो जाता है  
आस्था का आप्लवन एक संशय के कल्मष धो जाता है

क्योंकि तुम हो।  
कठिन विषमताओं के जीवन में लोकोत्तर सुख का स्पंदन मैं भरता हूँ

अनुभव की कच्ची मिट्टी को तदाकार कंचन करता हूँ  
क्योंकि तुम हो।

तुम तुम हो; मैं—क्या हूँ?  
ऊँची उड़ान, छोटे कृतित्व की लंबी परंपरा हूँ,

पर कवि हूँ स्रष्टा, द्रष्टा, दाता :  
जो पाता हूँ अपने को भट्टी कर उसे गलाता-चमकाता हूँ

अपने को भट्टी कर उसका अंकुर पनपाता हूँ  
पुष्प-सा, सलिल-सा, प्रसाद-सा, कंचन-सा, शस्य-सा, पुण्य-सा, अनिर्वच  
आह्लाद-सा लुटाता हूँ

क्योंकि तुम हो।

## अज्ञेय

समादृत कवि-कथाकार-अनुवादक और  
संपादक। भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित।



# दिल्ली के शिक्षा, स्वास्थ्य और जातीय जनगणना पर खुलकर बोले समज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह



**भारत श्री** की टीम ने हाल ही में दिल्ली सरकार में सामाजिक कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण, सहकारिता और चुनाव विभाग के मंत्री **श्री रविंद्र इंद्राज सिंह** से विशेष साक्षात्कार लिया। यह बातचीत में मंत्री जी ने स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय और दिल्ली की विकास योजनाओं से जुड़े बेबाक सवालों का संयम और गंभीरता से उत्तर दिया। इस साक्षात्कार के दौरान मंत्री जी ने जनता दरबार की पारदर्शिता, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर, एससी/एसटी छात्रों के लिए योजनाएं और जातीय जनगणना जैसे अहम मुद्दों पर अपनी स्पष्ट राय रखी।

मंत्री जी, यहां जो ताजगी और वातावरण दिख रहा है, ये हमेशा ऐसा ही रहता है या आज कोई विशेष दिन है?

नहीं, ये प्रतिदिन ऐसा ही होता है। लगभग 300 से 400 लोग रोजाना आते हैं। आज तो छुट्टी का दिन भी नहीं है, फिर भी देखिए, 500 से अधिक लोग सुबह-सुबह पहुंच गए हैं। और हम इनके समस्याओं का समाधान वहीं मौके पर करते हैं। लगभग 99% मामलों का निपटारा तत्काल हो जाता है।

मैं देख रहा हूँ कि आप केवल औपचारिकता नहीं निभा रहे, बल्कि खुद इन मामलों में गहराई से शामिल होकर समाधान करवा रहे हैं।

जब आप जनता से वोट मांगते हैं, तो उनके प्रति समर्पण भी करते हैं। यदि आपकी कथनी और करनी में अंतर है, तो राजनीति में टिकना मुश्किल है। भारतीय जनता पार्टी का हमेशा से यही संस्कार और विचारधारा रही है 'अंत्योदय' की भावना। यानी अंतिम व्यक्ति तक सेवा पहुंचाना। हमारे कार्यकर्ता सादगी और सेवा के भाव से काम करते हैं।

पिछली सरकार (आप) ने दिल्ली की राजनीति में स्वास्थ्य और शिक्षा को प्राथमिकता दी थी। आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

देखिए, शिक्षा और स्वास्थ्य तो हमारे लिए मूलभूत प्राथमिकता हैं। आप देखेंगे कि जितनी भी कैबिनेट की बैठकें अब तक हुई हैं, उनमें सबसे अधिक निर्णय शिक्षा के लिए लिए गए हैं। हेल्थ सेक्टर में भी हम नए संशोधन (Amend-

ments) की दिशा में काम कर रहे हैं।

आम आदमी पार्टी ने इन क्षेत्रों में बहुत प्रचार किया। क्या आप भी कोई बड़ा बदलाव ला रहे हैं?

उन्होंने प्रचार किया, लेकिन जमीनी स्तर पर काम नहीं हुआ। CAG की रिपोर्ट देख लीजिए, सारी सचाई सामने आ जाएगी। इन्होंने पब्लिसिटी पर पैसे खर्चे, प्रिंट मीडिया पर पैसे खर्चे। लेकिन रिजल्ट शून्य रहा। मोहल्ला क्लीनिक्स की हालत खुद जाकर देखिए। वहीं, हम दिल्ली में "आयुष्मान मंदिर" ला रहे हैं, जहाँ डॉक्टर, दवाइयाँ और टेस्ट सब मुफ्त में उपलब्ध होंगे।

आप एससी-एसटी वेलफेयर के मंत्री हैं। क्या शिक्षा और स्वास्थ्य में इन वर्गों के लिए कुछ विशेष प्रावधान किए जा रहे हैं?

बिल्कुल। 2016 से अब तक पिछली सरकार ने ट्यूशन फीस रिफंड जैसी योजनाओं पर कोई काम नहीं किया। हमने स्कॉलरशिप की प्रक्रिया को दुरुस्त किया है। विदेश में पढ़ने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप नहीं दी गई थी, हम उसे ठीक कर रहे हैं।

क्या केवल स्कॉलरशिप पर्याप्त है? रोजगार के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

स्कॉलरशिप के साथ-साथ हम एम्प्लॉयमेंट को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। टाटा जैसी कंपनियों से बातचीत हुई है और 11 जिलों में ट्रेनिंग सेंटर खोलने वाले हैं,

जहां युवाओं को प्रशिक्षण और प्लेसमेंट दोनों मिलेंगे। इसके अलावा, कोऑपरेटिव सेक्टर में भी हम रोजगार के अवसर बढ़ा रहे हैं।

क्या सरकार की ओर से प्लेसमेंट ड्राइव भी आयोजित की जा रही है?

हां, बिल्कुल। कल हमारे कपिल मिश्रा जी एक बड़ा मेला आयोजित करने वाले हैं, जिसमें केवल युवाओं के रोजगार की बात होगी। हमारा लक्ष्य है कि दिल्ली न केवल विकसित हो बल्कि युवाओं के लिए रोजगार का केंद्र भी बने।

इन दिनों जातीय जनगणना का मुद्दा गरमाया हुआ है। विपक्ष इसे लेकर राजनीति कर रहा है। आपकी क्या राय है?

2011 के बाद से जातीय जनगणना नहीं हुई। इससे साफ पता चलता है कि उस समय सरकार की क्या मानसिकता थी। अब जब भारतीय जनता पार्टी ने इसे शुरू किया है, तो यह निष्पक्षता और पारदर्शिता के लिए है। इससे समाज की सच्ची तस्वीर सामने आएगी।

क्या इससे समाज में वैमनस्य पैदा हो सकता है?

नहीं, बिल्कुल नहीं। जब निष्पक्ष आंकड़े सामने आते हैं, तो नीतियां भी पारदर्शी बनती हैं। जिसकी जितनी हिस्सेदारी, उसकी उतनी भागीदारी। यह भावना सामाजिक न्याय का आधार है। सही आंकड़े आने के बाद हर वर्ग को उसका हक मिल सकेगा।



# एस्पेरजिलस फंगस

## एक छुपा हुआ खतरा



### सांसें में छुपा दुश्मन

कल्पना करें, एक साधारण सुबह। आप खेतों में टहल रहे हो, हवा में मिट्टी की सौंधी खुशबू है। या फिर, शहर की भागदौड़ में, बस स्टॉप पर खड़े हो। हर सांस के साथ, आप अनजाने में हज़ारों छोटे-छोटे कण ले रहे हो। इनमें से कुछ हैं एस्पेरजिलस के कीटाणु—एक ऐसा फंगस जो मिट्टी, सूखे पत्तों, और धूल में पनपता है। सुनने में अजीब लगता है, लेकिन ये फंगस हमारे आसपास हर जगह हैं। ये छोटा सा फंगस सांसों में घुसकर जिंदगी को खतरे में डाल सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने एस्पेरजिलस फ्यूमिगेटस को दुनिया के सबसे खतरनाक फंगस में से एक बताया है। ये कोई साइंस-फिक्शन मूवी का विलेन नहीं, बल्कि एक हकीकत है जो हमें सोचने पर मजबूर करती है। क्या हमारी सांसें, जो हमें जिंदगी देती हैं, कभी-कभी खतरे का सबब बन सकती हैं?

### फंगस का खामोश हमला

एस्पेरजिलस कोई सुपरपावर वाला दुश्मन नहीं, जो रातोंरात सब कुछ तबाह कर दे। ये एक चुपके से काम करने वाला खिलाड़ी है। इसके बीजाणु हवा में तैरते हैं, और हम इन्हें रोज़ सांस में लेते हैं। अगर इम्यून सिस्टम मजबूत है, तो ये बीजाणु कुछ नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन जिनका इम्यून सिस्टम कमजोर है—जैसे कैंसर के मरीज़, ऑर्गन ट्रांसप्लांट वाले, या फेफड़ों की बीमारी (जैसे COPD या सिस्टिक फाइब्रोसिस) से जूझने वाले—उनके लिए ये जानलेवा हो सकता है।

इस फंगस से होने वाली बीमारी, इनवेसिव एस्पेरजिलोसिस, फेफड़ों या शरीर के दूसरे हिस्सों में फैल सकती है। आंकड़े डराने वाले हैं—30 से 90 प्रतिशत मामलों में ये मौत का कारण बन सकता है, खासकर अगर इलाज देर से शुरू हो। दूसरी तरफ, जिन्हें अस्थमा या एलर्जी है, उन्हें 'एलर्जिक ब्रॉन्कोपल्मोनरी एस्पेरजिलोसिस' (ABPA) हो सकता है। ये कम खतरनाक है, लेकिन सांस लेना मुश्किल कर देता है। सवाल ये है—जब ये

फंगस हर जगह है, तो हम इसे क्यों इग्नोर करते हैं? शायद इसलिए कि ये दिखता नहीं। ये कोई कोविड जैसी महामारी की तरह हेडलाइंस नहीं बटोरता। लेकिन WHO की चेतावनी साफ है: एस्पेरजिलस को हल्के में लेना भारी पड़ सकता है। और अब, जलवायु परिवर्तन इस खतरे को और बढ़ा कर रहा है।

### गर्म होती धरती, बढ़ता खतरा

जलवायु परिवर्तन सिर्फ बाढ़, सूखा, या गर्मी की बात नहीं। ये हमारी सेहत को भी बदल रहा है। गर्म होती धरती और बदलती नमी एस्पेरजिलस जैसे फंगस के लिए पफेक्ट माहौल बना रही है। जैसे गर्मी में खरपतवार तेज़ी से उगता है, वैसे ही ये फंगस नए-नए इलाकों में फैल सकता है। वैज्ञानिक कहते हैं कि गर्म मौसम में इसके बीजाणु ज़्यादा देर तक जिंदा रह सकते हैं। भारत जैसे देश में, जहां गर्मी और उमस पहले ही चरम पर है, ये खतरा और गंभीर हो सकता है।

उदाहरण के लिए, कैडिडा औरिस नाम का एक और फंगस, जो गर्मी में पनपता है, अस्पतालों में पहले ही कहर बरपा रहा है। एस्पेरजिलस भी ऐसा ही कुछ कर सकता है। लेकिन प्रॉब्लम ये है कि हमारे पास पूरी जानकारी नहीं।

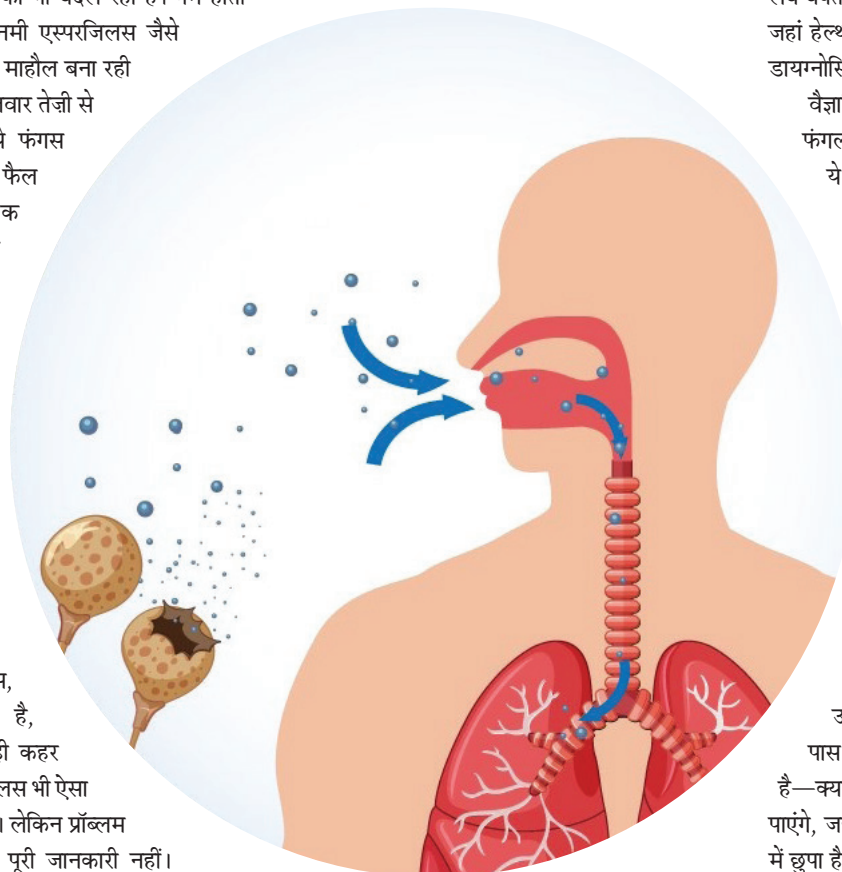
वैज्ञानिक अभी स्टडी कर रहे हैं कि क्लाइमेट चेंज फंगस को कैसे बूस्ट कर रहा है। फिर भी, एक बात पक्की है: अगर हम पर्यावरण की अनदेखी करते रहे, तो ये छोटा सा फंगस हमारी सेहत के लिए बड़ा सिरदर्द बन सकता है। सोचो, क्या हमारी धरती का गर्म होना, हमारे शरीर को भी बीमार बना रहा है? ये सवाल हमें रातों की नींद उड़ा देता है।

### आशा की किरण और हमारी जिम्मेदारी

तो क्या एस्पेरजिलस से डरकर जीना होगा? बिल्कुल नहीं। डर की जगह समझदारी चाहिए। कुछ आसान स्टेप्स इस खतरे को कम कर सकते हैं। अगर इम्यून सिस्टम कमजोर है, तो धूल भरे माहौल से बचो। मास्क पहनो, खासकर खेतों या कंस्ट्रक्शन साइट्स के पास। अस्पतालों में HEPA फिल्टर जैसे सॉल्यूशंस हवा को साफ रख सकते हैं। अगर सांस लेने में दिक्कत, बुखार, या खांसी लंबे वक्त तक रहे, तो फौरन डॉक्टर से मिलो। भारत में, जहां हेल्थकेयर सिस्टम पहले ही प्रेशर में है, टाइम पर डायग्नोसिस जिंदगी बचा सकता है।

वैज्ञानिक भी इस फाइट में हमारे साथ हैं। नई एंटी-फंगल दवाइयों पर रिसर्च चल रही है। लेकिन चैलेंज ये है कि एस्पेरजिलस कुछ दवाइयों के खिलाफ रेजिस्टेंट हो रहा है। खेती में यूज़ होने वाले फंगस-नाशक केमिकल्स इस रेजिस्टेंस को बढ़ा रहे हैं। हमें अपने खेतों और शहरों में इनके यूज़ को स्मार्टली मैनेज करना होगा। साथ ही, क्लाइमेट चेंज को रोकने के लिए एक्शन लेना होगा—कम कार्बन, ज़्यादा पेड़, और साफ पर्यावरण।

आखिर में, ये सिर्फ एक फंगस की कहानी नहीं। ये हमारी जिम्मेदारी की कहानी है। हमारी सांसें, हमारा पर्यावरण, और हमारी सेहत—सब एक-दूसरे से कनेक्टेड हैं। अगर हम आज नहीं जागे, तो कल शायद लेट हो जाए। याद है वो सुबह, जब हमने खेतों की सैर से बात शुरू की थी? उस हवा में खतरा हो सकता है, लेकिन हमारे पास उसे साफ करने की ताकत भी है। सवाल ये है—क्या हम अपने बच्चों के लिए एक ऐसी दुनिया बना पाएंगे, जहां सांस लेना सेफ हो? जवाब हमारी कोशिशों में छुपा है।





# शहबाज़ शरीफ का कबूलनामा

## ब्रह्मोस मिसाइल ने हमें चौंका दिया



**क्या** एक पल में इतिहास बदल सकता है? हाल ही में अज़रबैजान के लाचिन शहर में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ ने कुछ ऐसा कहा, जिसने दुनिया का ध्यान खींच लिया। उन्होंने कबूल किया कि भारत ने ब्रह्मोस मिसाइलों से पाकिस्तान के ठिकानों पर हमला किया, और उनकी सेना की सारी प्लानिंग धरी की धरी रह गई। यह सिर्फ एक बयान नहीं था—यह था एक मुल्क की हार का इकरार, और भारत की ताकत का ऐलान।

### पहलगांम का दर्द: जंग की शुरुआत

22 अप्रैल 2025, पहलगांम, कश्मीर। सुबह की खामोशी को आतंकियों ने गोलियों से चीर दिया। 26 मासूम ज़िंदगियाँ छीन लीं—माँ, बाप, बच्चे, जो सिर्फ अपनी ज़िंदगी जी रहे थे। जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा, और हिज़बुल मुजाहिदीन जैसे आतंकी संगठनों का नाम सामने आया। भारत के लिए यह सिर्फ एक हमला नहीं था—यह था एक घाव, जो पुरानी चोटों को फिर से कुरेद गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, “आतंकवाद के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस पॉलिसी है।” गृहमंत्री अमित शाह ने और साफ़ शब्दों में कहा, “पाकिस्तान को जवाब देना होगा।” और जवाब आया—ऑपरेशन सिंदूर। 7 मई 2025 को, भारत ने ब्रह्मोस मिसाइलों से पाकिस्तान और PoK (पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर) में 9 आतंकी ठिकानों और 11 हवाई अड्डों पर हमला किया। नूर खान एयरबेस, भोलारी, मुरीद, स्कर्टू—हर जगह भारत की ताकत गूँजी। 100 से ज़्यादा आतंकी ढेर हुए। मगर सवाल उठता है—क्या यह जीत सिर्फ हथियारों की थी, या इंसानियत की हार का एक और अध्याय?

फ़िलॉसफ़ी कहती है, हिंसा कभी जवाब नहीं होती। फिर भी, जब आपका घर जल रहा हो, तो क्या आप चुप रह सकते हैं? पहलगांम के उन परिवारों का दर्द, जो अपने अपनों को खो चुके थे, भारत को चुप रहने की इजाज़त नहीं देता। लेकिन क्या यह जंग सचमुच आतंक को खत्म कर पाएगी?

### ब्रह्मोस का दम: भारत की ताकत, पाकिस्तान की हैरानी

शहबाज़ शरीफ ने लाचिन में जो कहा, वो इतिहास में दर्ज हो गया। “हम फज़ की नमाज़ के बाद 4:30 बजे हमला करने वाले थे,” उन्होंने कबूल किया, “मगर भारत ने पहले ही ब्रह्मोस मिसाइलें दाग दीं।” यह सिर्फ एक बयान नहीं था—यह था भारत की खुफ़िया ताकत और मिलिट्री पावर का सबूत। ब्रह्मोस, जो 3 मैक की रफ़्तार से चलती है और 1 मीटर की सटीकता से टारगेट हिट करती है, ने पाकिस्तान के नूर खान एयरबेस से लेकर स्कर्टू तक को हिलाकर रख दिया।

पाकिस्तान की हवाई रक्षा, जो चीन से ली गई थी, खामोश रही। अमित शाह ने तंज कसा, “चीन का माल फिर फेल हो गया।” भारत ने न सिर्फ आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद किया, बल्कि पाकिस्तान की मिलिट्री प्लानिंग को भी चकनाचूर कर दिया। शहबाज़ का यह इकरार उनके अपने मुल्क में सवाल उठा रहा है—क्या उनकी सेना सचमुच तैयार थी? क्या उनकी सियासत इस हार को झेल पाएगी?

यहाँ एक गहरा सवाल उठता है: ताकत क्या है? क्या यह सिर्फ मिसाइलों की रफ़्तार है, या फिर अपने मुल्क की हिफाज़त का जज़्बा? भारत ने दिखाया कि ताकत सिर्फ हथियारों में नहीं, बल्कि सही वक़्त पर सही फ़ैसले

लेने में है। मगर इस ताकत का इस्तेमाल कब तक, और कितना? क्या हर जंग जीतने का मतलब शांति होता है? **सियासत और सोशल मीडिया: सच और झूठ का खेल**

इस जंग में सिर्फ मिसाइलें नहीं चलीं—सोशल मीडिया पर भी जंग लड़ी गई। X पर वायरल वीडियो और AI-जेनरेटेड क्लिप्स ने दोनों मुल्कों में भ्रम फैलाया। पाकिस्तान में कुछ इन्फ़्लुएंसर्स ने दावा किया कि उनकी सेना ने भारत के जेट्स गिराए, जबकि हकीकत में ऐसा कुछ नहीं हुआ। द गार्डियन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस “इन्फ़ॉर्मेशन वॉर” ने जंग को और उलझा दिया। भारत ने इस मामले में ज़्यादा डिसिप्लिन दिखाया, लेकिन सवाल वही है—सच को झूठ से कैसे अलग करें?

शहबाज़ ने एक तरफ़ हार कबूल की, तो दूसरी तरफ़ तेहरान में कहा, “हम चार दिन की जंग में जीते।” यह कन्फ़्यूज़न उनके अपने मुल्क में सवाल उठा रहा है। कुछ X पोस्ट्स में पाकिस्तानी यूज़र्स ने शहबाज़ को “झूठा” तक कहा। दूसरी तरफ़, भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने साफ़ कहा, “आतंकवाद खत्म नहीं होगा, तो कोई बातचीत नहीं।” यह सियासत का वह खेल है, जहाँ हर कोई अपनी कहानी बुन रहा है।

फ़िलॉसफ़ी हमें सिखाती है कि सच एक शीशा है—टूटने पर हर टुकड़ा अलग कहानी दिखाता है। इस जंग में, हर मुल्क, हर नेता, हर इंसान अपनी सच्चाई को सच मान रहा है। मगर सच का असली चेहरा क्या है? क्या वह पहलगांम में मरे मासूमों के आँसुओं में है, या मिसाइलों की गड़गड़ाहट में?

### शांति का रास्ता: सपना या हकीकत?

10 मई को दोनों मुल्कों के DGMO ने सीज़फ़ायर

का ऐलान किया। अमेरिका ने दावा किया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इसमें मदद की, मगर भारत ने साफ़ कहा—यह पाकिस्तान की पहल थी। शहबाज़ अब कश्मीर और इंडस वॉटर ट्रीटी पर बातचीत चाहते हैं, लेकिन भारत का जवाब सख़्त है: “पहले आतंकवाद बंद करो, PoK खाली करो।” यह टकराव सिर्फ़ दो मुल्कों का नहीं—यह है दो सोच का।

पाकिस्तान को तुर्की और ईरान का साथ मिला, मगर उसकी सबसे बड़ी सहयोगी, चीन, इस बार चुप रही। भारत ने न सिर्फ जंग जीती, बल्कि इंडस वॉटर ट्रीटी को सस्पेंड करके पाकिस्तान पर दबाव बढ़ा दिया। मगर यह जीत क्या शांति लाएगी? कश्मीर का मसला, आतंकवाद का साया—ये सवाल आज भी अनसुलझे हैं।

एक पुरानी कहावत है: “जंग आसान है, शांति मुश्किल।” इस कहानी में, भारत ने अपनी ताकत दिखाई, पाकिस्तान ने अपनी कमज़ोरी कबूल की। मगर असली सवाल यह है—क्या दोनों मुल्क उस रास्ते पर चल पाएँगे, जहाँ गोलियाँ नहीं, बातचीत गूँजे? पहलगांम के उन परिवारों को, जो अपने अपनों को खो चुके हैं, क्या सिर्फ जंग का जवाब चाहिए, या शांति का वादा?

### सौ सवाल, एक उम्मीद

यह कहानी मिसाइलों की नहीं, इंसानों की है। यह कहानी ताकत की नहीं, कमज़ोरियों की है। शहबाज़ शरीफ का इकरार, भारत की ब्रह्मोस, और दोनों मुल्कों की सियासत—ये सब एक बड़े सवाल की तरफ़ इशारा करते हैं: क्या हम जंग से ज़्यादा शांति की क़ीमत समझते हैं? पहलगांम का दर्द, PoK की चीखें, और सोशल मीडिया का शोर—सब यही कहते हैं कि जंग आसान है, मगर शांति के लिए हिम्मत चाहिए।





**प्रभु कृपा दुख निवारण समागम**



BY

**Arihanta  
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE  
HAIR  
SOLUTION**

**NO**

ARTIFICIAL  
COLOR  
FRAGRANCE  
CHEMICAL

# KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



**ORDER ONLINE @ :**

**amazon**

**arihanta.in**

**Arihanta Industries**